श्री आत्मकमल लब्धिसूरीश्वरेभ्यो नमः

नूतन स्तवनावली
सज्झाय-गहुंली-संग्रह



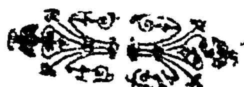
रचयिता—

पू. पा. जैनाचार्य श्रीमद
विजयलब्धिसूरीश्वरजी महाराज

मुद्रक व प्रकाशक
जुहारमल मिश्रीलाल पालरेचा
जैनबन्धु प्रिंटिंग प्रेस, पीपली बाजार इन्दौर

प्रथमावृत्ति
२०००

[illegible] १९३९
सं. १९९५



प्रस्तावना.

आजकल जहां देखते है वहां पर जन समूह संगीत के शोखमें बढता जारहा है शृंगार रसवाले नाटकीय गायनोंको सीखकर जन समूह विषय-कषाय के रस्ते पर मंचरते है उनको खराब मार्ग से बचाने के लिए सुंदर और सरल भाषामें रचे हुए पद्यबंध जो धर्म क्षेत्रमें विचरने के प्रेरणात्मक होनें उनकी जरूरीयात मालुम होते जैनरत्न कलिकुल कीरीट आचार्य देवको बहोत विनंतीए होने पर उन परोप-कारी महात्माने समयोचित आवश्यकता को पूरी पाडी है. ये स्तवन भक्ति पूर्ण भाविकों रूप भमराओंके लिए श्रीजिन प्रतिमा रूप कमलीनी सुगधीदार अमी द्रष्टि रूपी सुवासित और मघमघती

सुज्ञजनोंको हृदय पटके अंदर प्रवेश कराने के लिए उत्तम साधनभूत है. गीत गान और नृत्य के साधनों द्वारा प्रभुप्रत्ये भक्ति रसमें तन्मय बनादेनेमें ये स्तवन इलक्ट्रीक पावरकी तरह अजब शक्तिशाली हैं.

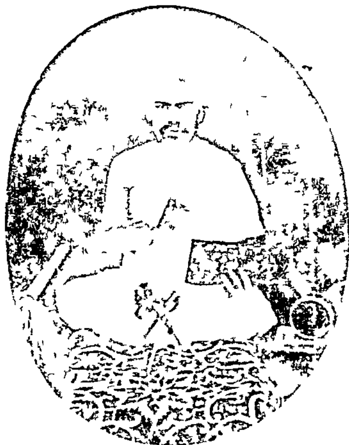
इन स्तवनों आदि का हेतु यही है कि नाटकीय गायनोंको सीखकर विषयादि में प्रतिदिन आगळवधती जैन जनता अटके और वीतराग देवकी भक्तिमें चित्त को लगावे. स्तवनो के अलावा वैराग्य को प्राप्त करानेवाली थोडीसी सज्झाय भी इस पुस्तक में डालनेमें आई है तथा मुनि श्री कीर्तिविजयजी महाराज की रचीहुई नये और पुराने रागकी आनंद को प्राप्त कराने वाली आखिर में गहुंलीओंका संग्रह भी करने में आया है ।

प्रकाशक.

पू. पा. श्रीमद् विजयलब्धिसूरीश्वरजी महाराज.



पू. पा. श्रीमद् विजयलक्ष्मणसूरीश्वरजी महाराज



ॐ अर्हम् ।

नूतन स्तवनावली.



(१) प्रभुगीत

आव्यो दादाने दरबार, करो भवोदधि पार;
खरो तु छे आधार, मोहे तार तार तार.
आत्मगुणनो भंडार, तारा महिमानो नहि पार;
देख्यो सुंदर देदार, करो पार पार पार.
तारी मूर्ति मनोहार, हरे मनना विकार;
खरो हैयानो हार, वदु वार वार वार.
आव्यो देरासर मोझार, कर्यो जिनवर जुहार;
प्रभु चरण आधार, खरो सार सार सार
आत्मकमल सुधार, तारी लब्धि छे अपार;
एनी गुणीनो नहिपार, विनति धार धार धार.

(२) सिद्धाचल–आदिजिन स्तवन

(राग-काली कमलीवाले तुमपें)

सिद्धगिरिपर आदि प्रभुको प्रातः प्रणाम
(अंचली)

तुं स्वामी में दीन हूं प्यारा,
तेरे बिन मुझ नहि निस्तारा;
आया तुम दरबार,
प्रभुको प्रातः प्रणाम. सिद्ध० १

जहान भरमें तीरथ उदारा,
भव्य हृदयका यही सतारा
तीरथ तारणहार,
प्रभुको प्रातः प्रणाम. सिद्ध० २

दिलचस्प दिलवर दिलधारा,
तबसे दिलका हुवा सुधारा;

बंदगी वारंवार,
प्रभुको प्रातः प्रणाम. सिद्ध० ३
ये गिरि मेरे नैन का तारा,
गुण मोतनका ये मुझ हारा;
केवल कमलाकार,
प्रभुको प्रातः प्रणाम. सिद्ध० ४
लाख चौरासी योनि वारे,
कर्म सकलको ए गिरि जारे;
ये गिरि मुज दिलदार,
प्रभुको प्रातः प्रणाम. सिद्ध० ५
आत्मकमलमें गिरि गुण गाना;
लब्धि सूरि यात्रा फल पाना;
सर्व तीरथ सिरदार,
प्रभुको प्रातः प्रणाम सिद्ध० ६

---

(५) चारूपमंडण श्री पार्श्वजिन स्तवन

(राग-पंजाबी भैरवी)

पार्श्वप्रभु मोहे देदो शरण.
  देदो शरण प्रभु देदो शरण. पार्श्व० १
चारुपमंडन सबी *अघखंडन,
  भविक जनोंको मोदकरण. पार्श्व० २
वीतराग तुं मोहनगारा,
  यही विरोध मोहे विस्मयकरण. पार्श्व ०३
मोहनी मूरत तोरी है न्यारी,
  राग-द्वेषको करती हरण, पार्श्व० ४
दूषम काले ज्योति स्वरूपी,
दर्शन प्रभुका है तारण-तरण. पार्श्व० ५
आनंदकारी भवदुःखवारी,
  पुण्ये मिले प्रभु पार्श्व चरण. पार्श्व० ६

---

* पाप.

दु ख दोहग तुम नामे नासे,
कंठे धरे होय कर्म जरण. पार्श्व० ७
आतम कमलमां-लब्धि लहेरो,
मिल गये टले जन्म मरण. पार्श्व० ८

(६) थंभण पार्श्वजिन स्तवन.

(राग-नागर वेलीयो रोपाय)

प्रेम धर्मनो जगाव, तारा शुद्ध चित्तोमां;
प्रभु पार्श्वजी वसाव, तारा शुद्ध चित्तोमा १
थमण पार्श्वजिनजीप्यारा, छे रागद्वेषथी न्यारा,
तारा कर्मने हटाव, जाइ शिव महेलोमा. २
तुं चार गतिमां रुल्यो, जो धर्म भावना भूल्यो;
सुंदर भावना जगाव, तारा शुद्ध चित्तोमा. ३
जीव पुण्य उदय अहीं आव्यो, वळी
मिथ्याभाव वमाव्यो;

जिनराज धर्म सुहायो, तारा शुद्ध चित्तोमां. ४
रहो नित्य नाम जिन रटता, हटशे हृदयनी
जडता;
सुख जामशे अनुपम तारा शुद्ध चित्तोमां. ५
निज चित्त ठामजो आवे, लब्धि आत्म-
कमलमां जागे;
गुणगणो अति उभराशे, तारा शुद्ध चित्तोमां ६

(७) महावीर प्रभु स्तवन.

(राग-फीरोशीकी तमन्ना.)

आहा! केवुं भाग्यजाग्युं, वीरनाचरणो मल्या;
रोग-शोक दारिद्र सघळां, जेहथी दूरे टल्यां
आहा० १
फेरो फर्योछे दुरगतिनो, शुभगति तरफेणमां;

अल्पकाळे मोक्ष पामी, विचरशुं आनंदमां.
आहा० २

जेमना तपनो न महिमा, करी शके शक्रेशभी×
तेमने हु स्तवु शु बालक, शक्तिनो ज्या
लेश नहीं आहा० ३

कामधेनु कामकुंभ, चिंतामणी तुं मल्यो;
आज मारे आंगणे श्री, वीर कल्पतरु
फल्यो. आहा० ४

लब्धिना भंडार व्हाला, वीर वीर जपतां थयां;
गौतम श्री मोक्ष धामी, ए प्रभुनी छागी
दया. आहा ० ५



× शक्र इंद्र,

(८) श्रीमहावीर जिन स्तवन.

(मथुरामां खेल खेली आव्या-ए राग)

वीर तारुं नाम व्हालुं लागे हो श्याम
शिवसुखदाया. (अंचली.)
क्षत्रियकुंडमां जन्म्या जिणंदजी;
दिग्कुमरी हुलराया, हो, स्वाम. शिव० १
माथाना मुगट छो आंखोना तारा,
जन्मथी मेरु कंपाया, हो स्वाम. शिव० २
मित्रोनी साथे रमत रमतां,
देवे भुजंग रूप ठाया हो स्वाम शिव ३
निर्भय नाथे भुजंग फेंकी,
आमल क्रिडाने सोहाया, हो स्वाम. शिव० ४
महावीर नाम देव नाथे त्यां दीधुं,
पंडित विस्मय पाम्या हो स्वाम. शिव० ५

चारित्र लइ प्रभु कर्मों हटाइ,
केवलज्ञान प्रगटाया, हो स्वाम शिव० ६
हिंसा मृषा चोरी मैथुन वारी,
परिग्रह बूरा बताया, हो स्वाम शिव० ७
आत्मकमलमां शैलेशी साधी,
शिवलब्धि उपाया, हो स्वाम. शिव० ८

(९) महावीरस्वामी स्तवन.

(राग-प्रभुजी तुमारे दरबार.)

मैं केसे आवुं प्रभुजी तुमारे दरबार.. ..
(२) (अंचली.)
मैं हुं रागी तु है निरागी,
मैं हु बडा ही गुन्हेगार. मैं० १
वीर प्रभु तुं गुण गण धारी,
मुजमें अवगुण है हजार. मैं० २

गुण प्रेमीनी तृषा हरे,
शुभ कांति हो तो आवी हो. मूर्ति० ३
दिलवर हमने जीवाडी,
अमर ए करशे सही;
आत्म--कमल--लब्धि तणी,
प्रेमाळ हो तो आवी हो. मूर्ति० ४

[११] सीमंधर स्वामी स्तवन.

(राग-प्रभातीआनो.)

शृणुत सीमंधरा, प्रणमी निज कंधरा;
वळी वळी तुज चरण सेवमागुं. शृणुत० १
प्रभु चरण सेवना, लभी शके टेवना;
अनधिकारी अभव्य अभागुं. शृणुत० २
करमदळ चूरवा निज गुणो पूरवा;
प्रह उठी प्रतिदिने पाय लागूं. शृणुत० ३

कर कृपा दास पर, दुःख सघा नाश कर.
सुख दियो मोक्षनुं में अथागुं. शृणुत० ४
कमल मुज आतमा, खोल परमात्मा;
सकल लब्धि भावे हुं जागुं. शृणुत० ५

[१२] सामान्य जिनपद.

(राग-मेरे मौला बूलादे)

मेरी अरजी उपर प्रभु ध्यान धरो,
मेरे दिलके ये दर्द तमाम हरो.

शेर.

कभी आधी कभी व्याधी, कभी उपाधी
आती हैं,
सेवा जिनराजकी साची, तीनोंकी जड
उडाती हैं;

मेरी लाख चोराशीकी पीर* हरो. मेरी०

शेर.

ज्ञान चाहुं ध्यान चाहुं,मस्त आतम भावमें;
जैसे बने वैसे करो, हो दिल निज स्वभावमें;
मेरा नूर मुझे बक्षीस करो. मेरी०

शेर.

तुंही त्राता तुंही भ्राता, तुंही रक्षणकार है;
तुंही ब्रह्मा तुंही विष्णु, तुंही तारणहार है.
मेरी डुबत ×नैयाको पार करो मेरी०

शेर.

पूरब फिरा पश्चिम फिरा,दक्षिण फिरा उत्तर फिरा;
देखा नहीं दरबार ऐसा, चमकता आतम हीरा.

---

* पीडा ×होडी.

मेरा ज्योतिसे ज्योत मिलान करो मेरी०

शेर.

तुं जुदा नहीं में जुदानहीं और कोई जुदानहीं;
पर्दा उठे जो कर्मका, तो भरम सब भागे सही;
प्रभु वोही करमपट दूर करो. मेरी०

शेर.

आतम- कमलमें है भरी, खूब खूबीयो
जिनराजजी;
लब्धि विकासी नाथ मेरे, सारो सबरे काजजी
मेरे ज्ञान खजानेको खूब भरो. मेरी०

१३ श्री महावीर स्तवन.

(धन्य धन्य वो जगमें नर नार ए चाल)

भजले महावीर भगवान,
भवमे पार लगानेवाले;

सिद्धारथ कुळ-नभ चंद,
    राणी त्रिशला के हे नंद;
काटे जन्म मरण के फंद,
    मोक्षकेद्वार·पहुंचानेवाले. भज० १
शक इंद्र दिलमें आया,
    तब मेरु प्रभुने हीलाया;
ताकात है जिनकी अपार,
    जन्मसे मेरु चलानेवाले भज० २
क्षत्रियकुंड नगर मोझार,
    लिया जन्म प्रभुने धार;
तारे हैं लोक अपार,
    मोक्ष पावामें पानेवाले. भज० ३
जो स्मर लेवे जिनराज,
    वो रख्खे उनकी लाज;

---

१ पावापुरीमां

सब पूरण करदे काज,
कर्म-जडको ए हटानेवाले. भज० ४
जयपुर नगर विशाल,
सोहे जिनमंदिर लाल;
मूलनायक है प्रतिपाल,
ज्ञान "लब्धि" के पानेवाले भज० ५

१४ आबुतीर्थ आदि जिन स्तवन

(राग-तेडु थयुं किरतारनु)

आबु पर दिल काबु आवे,
आदि जिनवर ध्यान से;
नाथ नेमिको विलोकत,
मुक्ति लो सन्मान से (अंचली)
कर्म कोरणी कोरणी को,
देख दिल खुश है यहां;

पार्श्व महावीर को निहारो,
शान्ति भेटो चाहसे. आबु० १
अचळगढके मंदिरों में,
मूर्तियां निहाल कर;
स्वर्णमयीसी तृप्त हूवा,
दर्श अमृतपानसें. आबु ० २
पुण्यशाली इस जगतमें,
विमल आदि हो गये;
क्रोडो रुपैये यहां लगाके,
रचे मंदिर मानसे. आबु० ३
श्री वीर पुनित पादसे,
भूमि यह पावन भइ;
भावसे यह भूमि स्पर्शन,
किया जिनवर तानसे. आबु० ४
लब्धिसूरि तीर्थ स्वामी,

पार खेवाको करो;
आत्मकज विकाश करीयो,
मुक्तिके वरदान से आवु० ५

शिवगनमंडन

१५ श्री आदिजिन स्तवन.

(राग-पार्श्वजिणंद भजके परमपद पावना)

आदिजिणंद भजके, करमजड जारना.
(अंचली)

छोड माया प्रभु संयम पाया,
सहस वरस इसमें दिल ठाया;
यथाख्यात चारित्रे सुहाया,
ज्ञानदशा सजके—करमजड० १
केवलज्ञान को जिनजी पाया,
एक समय में सबही दिखाया;

नर सुरा सुरपति गुण गाया,

समवसरण रचके— करमजड० २

देवाधिदेव मेरे नाथ सोहंदा,

हरे भविकजन करमका कंदा;

आपे जनको अभंद आनंदा,

पार होना नमके—करगजड० ३

माता मरुदेवा दर्शको आये,

दर्शन से शिवपद्वी पाये;

सादी अनंती स्थिति ठाये,

श्रीजिन गुण ग्रहके— करमजड०४

आत्मकमल में जो जिन ध्यावे,

लब्धिसूरि निज कर्म खपावे;

लाख चोरासी फेरा मिटावे,

गुणी हो गुण रटके—करमजड०५

---

१६ श्री सुपार्श्वजिन स्तवन-

(राग-जावो जावो ए मेरे साधु रहो गुरुके संग)

सेवो सेवो भविक तुमे सुपार्श्व जिन सुरंग,
(अंचली:)

जो दर्शन प्रभु आय के करते,
शान्त होते भवि लोक;
दर्शन करके पापको हरके,
हरे कर्म कुरंग. सेवो० १

रहो निरतर जिन को भजते,
हरो निचका संग;
आतम ध्यानमें मगन मयेंगे,
करी कर्म से जंग. सेवो० २

आतम भावना स्थिर प्रभु करते,
करे विषयका भंग,

सप्तम जिनवर दिलसे सेवो,
धरी हृदय उमंग. सेवो० ३
प्रभु पीपासा शिवकी आशा,
पुरत है मन चंग;
प्रभु-पूजाको करो निरंतर,
होवे नाश अनंग. सेवो० ४
जुठी जगमाया प्रभु हरते,
आपे सुख अभंग;
आत्मकमलमां "लब्धि" दाता,
सुधरत है सब ढंग. सेवो० ५

१७ मल्लिजिन स्तवन.

(राग-मैं तो सेवा करशांजी)

मैं तो हजुर रहेशांजी मल्लिजिन साहिबरी,
मैं तो सेवा करशांजी. (अंचली.)

एकने छोडी बेने तोडी, त्रणनो करशुं त्याग;
चारने छोडी पांचने मोडी, छशुं धरशुं राग.
मैं तो० १

सात हरीने आठ वरीने, नवनो करीने नाश;
दशने दिलनी अंदर राखी रहुं एकादश खास
मैं तो० २

बार विचारी तेरने वारी, चौदनो करशुं छेह;
भवभ्रमणा दुःख दूर करण कुं, धरुं पन्नरसु
नेह. मैं तो० ३

सोलने वारी सत्तर टारी, हरी अढार हंमेश,
ओगणीशनो विचार करीने, टाळीश मारो
कलेश. मैं तो० ४

वीश विचारी एकवीश टारी, बावीशशुं धरी
प्रेम,

तेवीश प्रभुजी शुभवल आपे, रहेवा कुशलक्षेम
मैं तो० ५

कर्ममल्ल श्री मल्लिस्वामी, आव्यो तुम दरबार,
कर्म लवाडी हरो अमारा, लुंटी रह्यो घरबार
मैं तो० ६

आत्मकमलमां ध्यान तमारुं, जाणी रक्षणकार,
लब्धिसूरि जिन प्रीते प्रणमे वसवा शिव
मोझार. मैं तो० ७

गोहीलीमंडन

१८ पार्श्वजिन स्तवन.

(राग-छोटा मोरी सैयारे जालीको मेरे गुंथना)

पार्श्वप्रभुजीरे, विनती मोरी मानना
(अंचली)

अति दुःख पाया मैंने, मोह के राज में (२)
लाख चोराशी रे, योनि में जहाँ घूमना.
पार्श्व० १

फंस रहा हु मैं तो, कर्मों के घेरमें (२)
चार गति केरे, दुःखों को बडे झीलना.
पार्श्व० २

भटक रहा हु प्रभु, अंधेरी रेन में (२)
ज्योति जगादो रे, टले ज्युं मेरा रुलना
पार्श्व० ३

सम्यगदर्शन, ज्ञान के राज में (२)
चरण मीलादो रे, स्वामीजी नहीं भूलना
पार्श्व० ४

आत्मकमलमें जिन रहो दिलमें (२)
लब्धिसूरिकोरे, हटादो जग झुलना
पार्श्व० ५

सिहोरीमंडन

१९ पार्श्वजिन स्तवन.

(राग-भारतका डंका आलममें.)

शुद्ध दर्शन देकर शिवपुरका,
दिखलाया द्वार जिनेश्वरने;
एक पलमें पाप विनाश किया,
भवी जनका पार्श्व जिनेश्वरने. (अंचली)

जब काष्टमें जलता नाग दिखा,
समजाया कमठ योगीश्वरको;
जलते को काष्टसे बाहर किया,
सुनवाया मंत्र जिनेश्वरने. १

सुन मंत्रको वो धरणेंद्र हुआ,
नवकारका महिमा खूब किया;

दे दर्शन भवसे पार किया,
भवीजनका पार्श्व जिनेश्वरने २
दुनिया दोरंगी छोड दीनी,
प्रभु पाये शुभ संजम धनको;
तप करके घाती जलाय दिया,
लिया केवलज्ञान जिनेश्वरने. ३
प्रभु केवल पा उद्योत किया,
जग जीवोका उद्धार किया,
अघेर हरा तिरि सुरनरका,
उपकारी पार्श्व जिनेश्वरने. ४
शुभ आत्मकमल में ध्यान धरी,
शैलेशीकरण विषे विचरी.
जा मुक्ति शिव सपदको लिया,
"सूरिलब्धि" पार्श्व जिनेश्वरने ५

राधनपुरमंडन

२० श्री शांतिजिन स्तवन.

(राग--मारुं वतन आ मारुं वतन)

प्रभु नमन कर प्रभु नमन,
खरुं खरुं छे प्रभु नमन (अंचली)
राग द्वेषनी छाया नहीं ज्यां,
एवा प्रभुथी टळे भवनुं भ्रमण प्रभु० १
क्रोध मान माया दूर काढो,
लोभ तणा प्रभु तोडो फंदन प्रभु० २
शांतिजिनेश्वर जग परमेश्वर,
भजन तमारु ताप हरे चंदन प्रभु० ३
षट खंड त्यागी संजम धार्युं,
अद्भुत त्यागी तने करुं वंदन प्रभु० ४
आत्मकमलमां "लब्धि" स्थापो,
तुंही शरण प्रभु तुंही शरण प्रभु० ५

२१ श्री पार्श्वनाथ–स्तवन.

(राग-जनारा जाय छे तु रा)

जनारु जाय छे जीवन,
    जरा जिनवरने जपतो जा
हृदयमां राखी जिनवरने,
    पुराणां पाप धोतो जा. जनारु० १
बनेलो पापथी भार,
    वळी पापो करे शीदने,
सळगती होळी हैयानी,
    अरे जालिम! बुझातो जा. जनारुं० २
दयासागर प्रभु पारग,
    उछाळे ज्ञाननी छोळो,
उतारी वासना वस्त्रो,
    अरे पामर! तु न्हातो जा जनारुं० ३

जिगरमां डंखतां दुःखो,
थयां पापे पीछानीने,
जिणंद्वर ध्याननी मस्ती,
चडे एने उडातो जा. जनारुं० ४
अरे! आतम बनी शाणो,
बतावी शाणपण म्हारुं,
हठावी जूठी जगमाया,
चेतनज्योति जगातो जा. जनारुं० ५
खील्यां जे फूलडां आजे,
जरुर ते काले करमाशे,
अखंड आत्मकमल—लब्धि,
तणी लय दील लगातो जा जनारुं० ६

छाणीमंडन

२२ श्री शांतिजिन-स्तवन.

(राग—झट जावो चंदन हार लावो)

भवि भावे देरासर आवो,
जिणवर जय बोलो,
पछी पूजन करी शुभ भावे,
हृदय पट खोलोने (अचली.)

साखी

शिवपुर जिनथी मागजो, मागी भवनो अंत,
लाख चोरासी वारवा, क्यारे थइशु अमे
प्रभुसंत. भवि एम बोलोने भवि. १

साखी—

मोंघी मानव जींदगी, मोंघो प्रभुनो जाप,
जपी चित्तथी दूर करो, तमे कोटी जनमना
पाप. हृदयपट खोलोने. भवि. २

साखी—

तुं छे मारो साहिबो, ने हुं छुं तारो दास,
दीनानाथ मुजपाळीने,प्रभु आपोने शिवपुर
वास. हृदयपट खोलोने. भवि. ३

साखी—

"छाणी"गामनो राजीयो,नामे शांतिजिणंद,
आत्मकमलमां ध्यावता शुद्धमले"लब्धि"
नो वृंद हृदयपट खोलोने भवि. ४

श्री सिद्धगिरिमंडन

२३ आदिजिन स्तवन

(राग-काळी कमलीवाले तुमपे लाखो सलाम)

सिद्धाचलना वासी जिनने क्रोडो प्रणाम.
(अंचली)

आदि जिनवर सुखकर स्वामी,
तुम दर्शनथी शिवपद धामी,
थया छे असंख्य, जिनने क्रोडो प्रणाम.
सिद्धा० १

विमलगिरिनां दर्शन करता,
भवोभवना तम-तिमिर हरतां,
आनंद अपार, जिनने क्रोडो प्रणाम
सिद्धा० २

हुं पापी छुं नीच गतिगामी,
कंचनगिरिनुं शरणुं पामी,
तरशुं जरूर, जिनने क्रोडो प्रणाम
सिद्धा० ३

अणधार्यां आ समयमां दर्शन,
करतां हृदय थयुं अति परसन,

जीवन उज्जवल, जिनने क्रोडो प्रणाम.
सिद्धा० ४

गोडी पार्श्व जिनेश्वर केरी,
करण प्रतिष्ठा विनति घणेरी,
दर्शन पाम्यो मानी, जिनने क्रोडो प्रणाम.
सिद्धा० ५

संवत ओगणीश नेवुं वर्षे,
शुद पंचमी कर्या दर्शन हर्षे,
मल्यो ज्येष्ठ शुभ मास,
जिनने क्रोडो प्रणाम. सिद्धा० ६

आत्मकमलमां सिद्धगिरि ध्याने,
जीवन भळशे केवळज्ञाने,
"लब्धिसूरि" शिवधाम,
जिनने क्रोडो प्रणाम. सिद्धा० ७

---

२४ सामान्य जिन स्तवन.

(राग-क्या कारण है अब रोनेका)

तेरी सेवा हम करनेका,
आतम में अब हुवा उजियाला,
पाया दर्शन श्री जिनवरका,
गया अंधेरा सभी जनमका, तेरी० १

कर्म छाये प्रभु घनघोर,
चूरण दर्श समीर निकला,
छिनकमें ए उड जावे. तेरी सेवा० २

तु गुण घन मैं मोर,
पूरण धर्म तिमिरनिकला,
व्याप रहा मेरे तनमनमें. तेरी० ३
आतमकमल भयो अब भोर,

देदो नाथ मुज लब्धि सकला,
तेरा शरण है सच्चा जगमें. तेरी० ४

वरकाणा मंडन

२५ श्री पार्श्वजिन स्तवन.

(राग-सिद्धाचलना वासी जीनने क्रोडो प्रणाम)

वरकाणा श्री पार्श्व प्रभुका पाया शरण,
प्रभुका पाया शरण.

वामा देवीके नंद दुलारा,
अश्वसेनके सुत सुखकारा;
भविजनके आधार. प्रभुका पाया० १

पीत्तलको चामीकर मानी,
बुरे देवको दिलमें ठानी;
हुवा बहुत खुवार. प्रभुका पाया० २

काल अनंत युं निष्फल खोया,
ठोर ठोर दुःख बीजको रोया;
मिला प्रभु हितकार. प्रभुका पाया० ३
आनंद उर्मी तनमें सारे
सुखसागर बहा चित्त हमारे;
वाणी आनदकार. प्रभुका पाया० ४
तेरी आशाबंध में आया, .
हरो प्रभु झटपट भव माया;
दियो शिव वरनार. प्रभुका पाया० ५
संवत उग्नीस नाणु वर्षे,
चैत्र शुदी पुनमके दिवसे;
पाया दर्शन सार. प्रभुका पाया० ६
आत्मकमल निर्मल कर नाथ,
लब्धिसूरिको दीजिये साथ;
कियो कृपसें बहार. प्रभुका पाया० ७

सुमेर मंडन

२६ शांतिजिन स्तवन.

(राग-सोहीनी-ढुंढ फिरा जग सारा.)

शांति जिणंद सुखकारी सुखकारी,
प्रभुजी मानो वंदना. (अंचली.)
सुमेर मंडन पाप नीकंदन,
जगजन नंदन शीतल चंदन,
जगदावानलवारी नलवारी. प्रभुजी० १
अचीरादेवी नंद कहावो,
भाविक भवीको भवसे बचावो,
धन्य जीवन उपकारी उपकारी. प्रभुजी० २
गर्भमें आके मारी नीवारी,
अजब महिमा ए प्रभु तारी,
लियो पारेवो तें उगारी तें उगारी. प्रभुजी० ३

चक्रवर्तीकी रिद्धी पाये,
उसमें भी नही नाथ लुभाये,
लिया संजम हितकारी हितकारी. प्रभुजी० ४
सही उपसर्ग प्रभु केवल पाये,
चार निकायके देवता आये,
धामधुम करी भारी करी भारी. प्रभुजी० ५
समोवसरणमें देशना दिनी,
भविजन की बहु वृत्ति भीनी,
तार लिये नरनारी नरनारी प्रभुजी० ६
संवत ओगणीश बाणुं वर्षे,
चैतर शुद आठमके दिवसे,
कर्या दर्शन शिवकारी शिवकारी प्रभुजी० ७
आत्मकमलमें जिनवर ध्यावु,
लब्धिसूरी झट शिवपुर पावु,
अविनश्वर गुणधारी गुणधारी. प्रभुजी० ८

२७ जावाल पार्श्वनाथ स्तवन.

(राग–गझल)

प्रभु श्री पार्श्वकी सेवा,
    करेंगे हम करेंगे हम,
भवोदधि दुःखका दरीया,
    तरेंगे हम तरेंगे हम. (अंचली)
सुरत मुज प्राण प्यारेकी,
    धरेंगे हम धरेंगे हम,
उन्हीं के रंगसे जीया,
    भरेंगे हम भरेंगे हम. प्रभु० १
तोडके मोहका बंधन,
    उदासी होके विषयोंसे,
सलुनी-श्याम-सुरतमें,
    रमेंगे हम रमेंगे हम. प्रभु० २

सोने चांदीकी नहीं परवा,
न परवा सुत दारासे,
प्रभुके नामकी परवा,
रखेंगे हम रखेंगे हम. प्रभु० ३

करम घट माळ बुरीको,
छोडकर अब लगे पीछे,
तेरे एक नामकी माला,
जपेंगे हम जपेंगे हम प्रभु० ४

खुदी हमसे हटे जिनवर,
जपेंगे जापको तबतक,
जुदाइ नाथकी हमरी,
हरेंगे हम हरेंगे हम. प्रभु० ५

मरुधर देश जावाले
प्रभुका दर्श है पाया;

"हरिलब्धि" पुरी मुक्ति,
वरेंगे हम वरेंगे हम. प्रभु० ६

पालीताणा मंडन

२८ श्री गोडी पार्श्वजिन स्तवन.

(राग-नवीन दुनिया वसावीशुं)

गोडीजीन दील वसावीशुं.
अंतरनुं दिल हसावीशुं;
करममां नही फसाइशुं गोडी० १
शीखवशुं शुद्ध संयमने,
ओलवशुं मोहनी जाळो;
भविक उद्धारना माटे,
करमने मूळथी बाळी;
आतम ज्योती जगावीशुं. गोडी० २

भजशुं नित्य जिनवरने,
गुणोनी प्हेरशुं माळो;
हृदय शोभावा माटे,
जिणंदवर गुण संभाळो;
गुणोमा दिल रमावीशु गोडी० ३
सुधारी निज आतमने,
रीझवशु नाथने यारो;
लेवा सुख मुक्तिना माटे,
"सूरि लब्धि" मिले प्यारो,
पुरी मुक्तिमा ठाडशु, गोडी० ४

२९ सादडी चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तवन.

(राग-पोग्पोग्ल आदिश्वरयावा दादानारी मरजीरे)

नित्य नमु चिंतामणी पारस, सेवा प्यारीरे,

के दिलमां धारीरे. (अंचली.)
सादडी शहेरमां आप वीराजो,
मंदीर मोटो भारीरे,
देश देशके यात्रु आवे,
आनंद कारीरे. दिलमां० १
नगर बनारस जन्म लीयो प्रभु,
वामादेवी मातारे.
देव सकल मिल स्नात्र करायो,
हर्ष अपारीरे. दिलमां २
वरसीदान दइ संजम लीयो,
घाती कर्म खपायोरे,
वीतराग हो केवल पाम्या,
गुण गण कारीरे. दिलमां० ३
समोसरणमें आप वीराजो,
नीरखत आनंद पायारे,

वाणी थारी सकल जनोंको,
लागे प्यारीरे. दिलमा० ४
आतमकमलमां जिमने ध्याया,
सो शिवपुरको पायारे,
"लब्धिसूरि" पाम्या श्री जिनवर,
मुक्ति प्यारीरे. दिलमा० ५

---

३० केसरीयाजीनुं स्तवन.

(राग-केसरीया थाशुं प्रीत करीरे साचा भावशुं.)

केसरीया दादा दासके दुःख निवारजो.
(अंचली.)
इस अवसर्पिणी कालमें आदि,
राजा प्रभु कहाया,

प्रथम भिक्षुक प्रथम मुनीश्वर,
नाभिवंश दीपायारे. केस०
सर्व नीतिकी करी विदीति,
भवभीति हरनारा,
प्रभु चरणको प्रीते सेवे,
भवजलधि तरनारारे. केस०
एक वरस तक अन्न अभावे,
समभावे दिल ठाया,
सहस सम अदभुत तप करके,
केवलज्ञानको पायारे. केस०
भवीजन पीके आपकी प्रभुजी,
देशना अमृत मीठी,
संयमभाव करणसे फट गइ,
जन्म मरणकी चीठ्ठीरे. केस०
पुत्र नव्वाणुं प्रभुनी तारी,

करात शिवकी स्वारी.
अन्य भी लाखों जन उद्धरीये,
हमारी अब है वारीरे. केस०

पूरव नव्वाणु वार पधारे,
सिद्धाचल सरदार,
इससे सिद्धगिरिका महीमा,
हुवा है अपरंपाररे. केस०

अष्टापद पर मुक्ति पाये,
इन्द्र ओच्छव ठाया,
आत्मकमलमें जिनको ध्याया,
"लब्धिसूरि" शिव पायारे, केस०

———

३१ पावापुरी महावीर विरह स्तवन

(राग-भेखरे उतारो राजा भरथरी)

यादी रहे प्रभु वीर तणी,
दिलमां दिवस ने रातजी,
दुःखदाइ पावापुरीनी,
नहीं भूले ए वातजी. यादी० १

जग उपकारी नाथनी,
विरह केम भूलायजी,
मात विना जेम बालुडो,
आम तेम अथडायजी. यादी० २

सुरज अस्त थये थके,
जेम कमल करमायजी,
संघ सकल तेम वीर विना,
अति मनमां मुझायजी. यादी० ३

चंद्र वियोगे तडफडे,
जेम चकोर जिणदजी,
तेम तुज विरहे हुं तडफडु,
मोह तिमीर दिणंदजी. यादी० ४

चातक मेघ विना प्रभु,
नही शांति लगारजी,
तुम दर्शन विना आ मा,
पामे दुःख अपारजी. यादी० ५

निर्यामक भव सागरे,
अंतरीमां सार्थवाहजी,
महागोप जीव रक्षणो,
गए थयो दिल दाहजी यादी० ६

श्रुत आधार जिनवर गये,
हवे आगम आधारजी,

दर्शन मूरतिमां मळे,
माननुं साक्षात्कारजी. यादी० ७
आत्मकमलमां ध्यावतां,
नित्य वीर जीनेशजी,
"लब्धिसूरि" संपद मळे,
टळे सघळो कलेशजी. यादी० ८

३२ दीवाळी महावीर निर्वाण स्तवन

(राग-भेखरे उतारो राजा भरथरी)

वीर विरह अति कारमो,
संघथी केम सहायजी,
अपापा पापा थयुं,
दुःख ते न विसरायजी. वीर०

जीरण लेख शाला विषे,
    कर्युं अंतिम चोमासजी;
सोळ पहोर दीधी देशना,
    धुरो करो भव वासजी.   वीर०

पंचावन प्रभु शुभ करां,
    अशुभ छे पंचावनजी,
अध्ययन जीव गुण करां,
    अर्प्युं आतम धनजी.   वीर०

कारतकवद अमावास्या दिने,
    पाम्या प्रभु निरवाणजी,
नरवर दिप प्रगटावता,
    थयु पर्व महानजी.   वीर०

"देवशर्मा" प्रतिबोधवा,
    मोकल्या गौतम स्वामजी,

वीर नीरवाण काने सांभळी,
 दिलडुं बन्युं दुःख धामजी वीर०
वीर! वीर! इम विलपतां,
 पाम्या केवल ज्ञानजी,
वीतराग विचारतां,
 धन्य धन्य ए ध्यानजी. वीर०
आत्मकमलमां वीर प्रभु,
 धरतां ध्यान हंमेशजी,
"लब्धिसूरि" शिव संपदा,
 मळे सुख अशेषजी. वीर०

२२ चंपापुरी वासुपूज्यजिन स्तवन

(राग-अहो अहो पासजी मुज मळीयारे.)

चंपापुरी तीर्थने भवी सेवोरे,
 बीजो नही सुखदाइ मेवो. (अंचली)

विचरंता वासुपूज्य आव्यारे,
भविजनना दिलमां माव्यारे,
साथे संघ चतुर्विध लाव्या. च. १
प्रभु देशना दीधी रढीयाळीरे,
नाठी भविजननी मती कालीरे,
त्यांतो प्रगटी सुमती दीवाळी चं० २
अति उपकारी जिनरायारे,
ध्यान शैलेशी दिल ठायारे,
प्रभु शिवरमणीने पाया. चं० ३
समकित शुद्धिनुं कारण जाणोरे,
तिर्थ मेरानु फल दिल आणोरे,
थाय सेवाथी त्रीभुवन राणो चं० ४
आत्मकमलमा जिनवर ध्यानेरे,
"लब्धिसूरि" पहोंचे शिव स्थानेरे,
भक्ति होय ते साचु माने. च० ५

३४ पार्श्वजिन स्तवन.

(राग-रखीयां बंधावो भैया)

जीनजी को ध्यावो भैया गुणगण गावोरे
(अंचली)

मुरती प्रभु की आली सुरत नीराली
तारे तुमारी नैयां जयजगदीवो.. रे जिनजी
पुजन की थारी लगी है लयभारी
जगमां तुमारी जैयां जय जगदीवोरे जि०
दूरगति ने दारी आत्म गुणकारी
कर्मोंनो थावो खईयां जय जगदीवोरे जि०
गुणोकी श्रेणी आली देती है दुःखटारी
सबो सदाए सइयां जय जगदीवोरे जि०
पार्श्व जिणंदासे प्रीत लगी है मोहे
लब्धिसूरि गुण गइयां जय जगदीवोरे जि०

३५ वीरजिन स्तवन.

वीर जीणंद मुजे दिलमें भाया
काल अनादिका मोह भगाया
समकित मेरे दिलमें नमाया,

आतम ध्याया ज्योति जगाया
तुमही हो नीतराग चालम,
तुमही हो वीतराग वीर०

काल अनादि मे भवमें फमाया,
गुरु नहीं पाया दुःखमें दटाया
तुमही हो नीतराग नालम
तुमही हो नीतराग वीर०

प्रभु चरणोमें शिरको झुकाया,
दुःख दटाया मोह मीटाया

तुमही हो वीतराग वालम,
तुमही हो वीतराग, वीर०
अब जिनवर मेरे दिलमें ठाया,
गुणगण गाया भवसे तराया,
तुमही हो वीतराग. वीर०
भूला न जावे गुणको भूलाया,
ज्ञान जगाया आनंद पाया,
लब्धिसूरि सुखकार वालम,
लब्धिसूरि सुखकार. वीर०

३६ ऋषभजिन स्तवन.

(राग-गझल)

ऋषभजिन सुनलियो भगवान,
अरज तुमसे गुजारुंहुं (अंचली)
लगाकर कर्मने घेरो,

योनि लख वेदवसु फेरो,
जन्म मरणो की धारामें हा हा ।
कया कष्ट धारुहु   ऋषभ १
श्वासोश्वास एकमें जीनजी,
सत्तर मरणो जनम लीया,
गति निगोद निकारोमें,
अनंता काल हारूं हु   ऋषभ २
नरक दुःख वेदना मारी,
निकलने की नहि वारी,
शरण वहा हे नहि किसीका,
प्रभु ए सच्च पुकारुहु   ऋषभ ३
गति तिर्यंच की पामी
जहा नहि दुःखकी खामी

१ नेत्रामी

जभी दुःखसे चक्कर आवे,
　　नहि आंखो से भालुं हुं　　ऋषभ ४
मुझे एसा करो उपकृत्
　　होउँमें जिससे निर्मल हृत,
अट्ठावीश लब्धिको पाई
　　मोक्ष लक्ष्मी निहारुहुं ऋषभ. ५

३७ श्री अजितजिन स्तवन.

सुनो सुनो मेरी इतनी अरज,
　　अजित ! कान धरी;
भव दावा नल से बचालो
　　अमृत वृष्टि करी　　सुनो० १
पीछे है कर्म अरि,
　　उस पापी को दूर करी;

करो कृतार्थ दास अपने,
मोक्षकी महेर करी; सुनो० २
आपकी आश खरी,
मोहे और से कायपरी;
समकित सार लही है जिनवर,
नाम जपु तुमरी. सुनो० ३
मुज आतम कमलरी,
स्वामी खूब विकासितकरी;
सर्व लब्धि का नाथ बनादो,
तनिक महेर करी सुनो० ४

३८ इन्दौर आदिजिणंद स्तवन

(राग—कव्वाली)

इंदौर में बिराजे, आदि जिणदराया,
दर्शन जिणद करके, हर्ष हृदय भरागा इं०१

बलिहारिजिनजी तोरी, बिन हार तें निभाया,
एक वर्षतक विरागी तपसे तपाइ काया. इं० २
एक लाख पूर्ववर्षो, लगी लगन लगाया,
संजममें पूर्ण भावे, घातिकर्म भगाया. इं० ३
आतममें ज्योत प्रगटी, जिनकी सकल स्वरूपी,
रुपी भाव जगके जाने, जाने सबी अरुपी इं० ४
मालव भूमि मनोहर, इंदौर शहेर शोभे,
आदिजिणंदमंदिर, भविजनकेमनकोलोभे इं ५
आतमकमलमें जिनजी, हाजर हजुर हमारे,
शिवलब्धि नहि है दूरे, चरणे वशे तुमारे इं ६

३९ इन्दौर अजित जिन स्तवन

(राग-हुंतो पूजुंगा पारसनाथ बतादे पहाडिया)

अजितजिणंद सुखधाम. जपीले सुखकारीया.
जपीले सुखकारीया. अंचली

मालव देशे दीपे मनोहर, दीपे मनोहर
इंदौर मंदिर सार, जपीले सुखकारीया. १
नगरी अयोध्यामें प्रभु जन्मे, में प्रभु जन्मे,
त्यागदिया ससार जपीले. २
संजमधर प्रभुकेवल पाया, केवल पाया,
उपदेश दिया मनोहर. जपीले ३
क्षण भगुर ए मानव देहसे, मानव देहसे,
करील्यो धर्म सुखकार जपीले ४
प्रथम पाकर मुक्ति मिलावो, मुक्ति मिलावो,
दहकर करम कुठार जपीले. ५
प्रभु वचनोको सुनकर संयमी, सुनकर संयमी,
बहुत हुए नरनार. जपीले ६
अति उपकारी जिनवर जेसो, जिनवर जेसो,
और नहि अवतार. जपीले ७

आतमकमलमें धर शैलेशी, धर शैलेशी,
लब्धिसूरि हुए पार. जपीले. ८

४० नवपदजी का स्तवन.

(राग-दर्श ऋषभजिनकीजे भवियां)

सिद्धचक्र गुण गेहो भवियां
गेहोरे गेहोरे, धर्मदेहो. अंचली.
आतम सुखकी खतीकारक,
ए उपकारक मेहोरे मेहोरे मेहो
धर्म देहो. सिद्ध. १

सर्व तत्वका सार है इसमे,
देव गुरु, धर्म एहोरे एहोरे एहो
गुण गेहो. सिद्ध. २

इस्के सेवनसे कोढी श्रीपाल का,
कंचनमय भया देहोरे देहोरे देहो.
गुण गेहो. सिद्ध ३

आतम हितकर नवपद जगमें,
गुण अनंत घर लेहोरे लेहोरे लेहो
गुण गेहो सिद्ध० ४

हुए अनंते होंगे अनंते,
सिद्धवर धर सिद्ध नेहोरे नेहोरे नेहो.
गुण गेहो सिद्ध ५

आतम कमलमें नवपद ध्याने,
लब्धि सूरि कर्म छेहोरे छेहोरे छेहो
गुण गेहो. ६

———

४१ श्री पार्श्वनाथ स्तवन.

(राग ओ मोटरवाळारे मोटर जरा रोकना)

ओ पार्श्वभेटवारे कर्मोंको जरारोकना अंचली
काम न वसमें क्रोध न वसमें,
ए तुं सब जानेरे.
अहो मेरो आतम जानेरे कर्मोंको जरारोकना
नब्ज न वस्में दिल नहीं वसमें
ए तुं सब जानेरे.
अहो मेरो आतम जानेरे कर्मों को जरा
रोकना. २
नरके रखडतां निगोद मे पडतां
प्रभुजी बचावोरे
सुखसंपद लावोरे कर्मोंको जरा रोकना. ३

तिर्यंच दुखिया, देव भी दुखिया
मानव दुःख दायोरे
न होय धर्म सहावोरे कर्मों को जरा
रोकना. ४
आतम कमल में धर्म अमल में,
शुभ लब्धि जगावोरे
मुझे प्रभु शिवपुर ठावोरे
कर्मों को जरा रोकना ५

४२ चिंतामणी पार्श्वजिन स्तवन

(राग-मेरे मौला बुलादे मदीने मुझे.)

मुझे दर्शन पान पिलाया करो
मेरे आतम गुणको खिलाया करो,
साखी—
प्रभु चिंतामणी पारस लगन तोरी जीगरसे है

करो भवपार मुझखेवा नहींमहोवत दिगरसे है
प्यारे फीदवी को मत बहलाया करो. १
बेअंत सिफत देखके चरणोंका है शरणा लिया
कर्मकी सितमगीरिको आज धक्का देदिया
मेरे अंद्रुनी नूरको जगाया करो. २
आत्म-कमल-लब्धि विकासक
मिलगया जिनराज जब
पालीया अंतर खजाना नहीं रहे कंगाल अब
खाकसार करी खबरदार करो.

४२ श्री पार्श्वजिन स्तवन.

(राग-गझल)

शरण ले पार्श्व चरणोका
फिर फिर नहि मीले मौका (अंचली)

---

१ वक.

देवनके देव ए सोहे इन्होंका देख जो मोहे
हटे तस दुःख दुनिया का
फिर फिर नहि मीले मौका   शरण. १

इन्होंका नाम जो लेते उन्होंको शिवसुख देते
मारग यह मोक्ष जानेका
फिर फिर नहि मीले मौका.   शरण. २

अनादि काल भव भटका
जभी तु पार्श्व से छटका,
मिला अब नक्त ध्याने का
फिर फिर नहि मीले मौका   शरण. ३

जिन्होंने सर्प को तारा
नमस्कार मत्र के द्वारा,
वोही तुम तार लेनेका,
फिर फिर नहि मिले मौका शरण ४

गुण है पार्श्वमें जेसे,
नहि और देव में ऐसे
यही भवपार लगानेका,
फिर फिर नाहि मिले मौका. शरण ५

कहे लब्धि जिणंद सेवो
एसा है अन्य नहि देवो,
भवाब्धिपार करने का
फिर फिर नहि मिले मौका शरण ६

४४ श्री पार्श्वजिन स्तवन.

(राग-थई प्रेमवश पातलिया)

श्रीपार्श्व जिन गुण दरिया
मेरा दिल प्रभुजीने हरीयारे,
(अंचली)

शखेश्वर वर नाम धरायो
भव्य जीवन मनोहारी,
तुम चरणे सिर झुकाई
केई जीव भवोदधि तरीयारे,
श्री पार्श्व. १

पुरुषादानीय नाम कर्म से
नाम अनेक तुम धारो
जपने से होय सुधारो,
जापक शुभ गति अनुसरीयारे.
श्रीपार्श्व २

गत चोरासीमें यह सुंदर
बिंब प्रभुको निपायो
हम पुण्य उदय जब छायो
तब दर्शन जिनका करीयारे.
श्री पार्श्व. ३

लब्धि धारी मंगलकारी
मेरु उपमा धारो
लक्षण है पारा वारो,
प्रभु भुवन जयंत जय करीयारे
श्री पार्श्व. ४

आतम कमल निर्लेपी कारक
भव हारक शिवकारो
किये अनंत पुण्य अब धारो
जिसे लब्धि पात्र जिनमलीयारे.
श्री पार्श्व ५

४५श्री पंचासर पार्श्व जिन स्तवन.

(राग-जालीम सरकारके हम पाले पडे हैं)

पंचासर पास तोरे शरणे खडे हैं
कर्मों के पास में फसाये पडे हैं अंचली.

शरणा लीया तेरा प्रभु,
वो कर्मसे नहि हारता
आतम की मस्ती में चढे चढे है
पचासर० १

त्याग धर्म तें कहा है,
मुख जो नहि मानते
खड्डे में दुर्गत के वो जापडे हैं.
पचासर० २

त्याग दो जिनवर हमें,
राग नहिं मनमें रहे
ढोंगीसे नहि हटने वाले अडे हैं.
पंचासर० ३

तेरे धरमकी वासना,
रोम रोम रमती रहे
दुर्जन भले पीछे सामे खडे हैं. पंचासर० ४

तेरा प्रभु है राज जहां पर,

काज वहां नहि मोहका

मोहीतो तेरेसे न्यारे पडे हैं. पंचासर० ५

जैन कहलाते बहुत,

अजैन हैं कलिकालमें

संयम के कामोंसे नाहक रडे हैं.

पंचासर० ६

संयमी वैरी बनी,

अयोग्यता आगे धरे

विरती के वैरी वे खुल्ले पडे हैं.

पंचासर० ७

दर्शन करे है दोडकर,

तेरे प्रभु जो रोजही

तेरे धरम के मरमसे लडे हैं.

पंचासर० ८

आतम कमल को खोल कर,
दीजिये प्रभु सन्मति
लब्धिकी लहेरोंमे मिले पडे है.
पंचासर० ९

जोगीवाडा मंडण

४६ श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन

(राग सावरीया से हमसे ए ना बनी)

सावरा पारस तेरे चरणे रलीरे अचली
प्रकाशो ज्ञान बत्तीया मिले शिव सुदरी.
प्रेमसे निभावो बनी प्रीत भलीरे.
सांवरा० १

हटादो मोह रतियाँ जाय ममता मरी,
भावना जगावो जाउं तुमसे हलीरे
सावरा० २

कटे है कर्म कतियां हटे ए बुरा अरि
आतम कज खोलो रहुं लब्धि मलीरे
सांवरा० ३

४७ महावीर स्वामी स्तवन.

पूजो वीर प्रभु सुखकार
पाप दल पटक पटक पटक
पूजा करदेगी भवपार,
न रहे खटक खटक अंचली.
अर्जुन माली से पापी नर
तोडी कर्म कटक
वीर प्रभु पूजा फल देखो,
पहोंचे शिवपुर झटक. पूजो० १
चंदन बालासे लेई उडादिये,
दिया केवल फटक

रणे शूर दाने जो वीर है,
न रहे देतां अटक पूजो० २
श्वासमांही सोवार सिमरलो
बन जाओ वीर रटक
वीर रूप तुम ही हो जावो,
हटजावे भवनटक पूजो० ३
काल अनंत से समय मिला है,
तुजको भवघन भटक
पाप तत्त्व परिहारी प्राणी
भवबन सोजा छटक. पूजो० ४
वीर प्रभु से तान लगाई
आतम कर ज्यु स्फटक
कमलवत् निर्लेप बनी फिर
ले "लब्धि" शिव चटक पूजो० ५

— —

४८ श्री सामान्यजिन स्तवन.

(राग-देश उडी हवामें जाती है)

रुची प्रभुमें होती है, होती रुची ए स्वाम
आवो प्रभुजी दिल मे मेरे
नाशे करम मग आठ रुची
प्रभुकी संगत रंगत लावे,
शिवपुर से मिलती मतियां
आत्मकमल में लब्धि लावे.
चाहुं श्री जिनराज रुची. रुची.

४९ श्री शीतलनाथ स्तवन.

(राग-साजन सुन सुपनेकी बात)

श्री शीतल झालो हम हाथ
जिनजी ... ... हो शीतळ०

जिम जिम तुम हम नाम दिलोमें
लावे जिन आनंद वरसाद जिनजी
मेरे स्वामी, रसीली तोरी पामी,
मूरती गुण धामी.
आजतो नाथ भाग्ये मिली जिनजी
दिल मिलाकर, ज्ञान दिलाकर,
देदो धर्मकी रीत.
आजु वाजु पर सुपार्श्व सोहे,
वासुपुज्य जिणंद
केसर पुष्प से कीजे अर्चन,
करीए भजन सुखकार
भविया पल पल जपो जिनराय. जिनजी
साखी.
आतम कमल लब्धि मिले,
जिन जिन जाय सुरग

श्री जिन भक्ति मन मली,
करे अनंगनो भंग.
भवियां पावे शिवपुर सात जिनजी.

५० इडरगढ श्रीशांतिनाथ स्तवन

(राग-छोटेसे बलमे मोरे)

शान्ति जिणंदजी के ध्यानमें,
ए मस्तक डोले.
ध्यानमें ए मस्तक डोले,
ध्यानमें ए मस्तक डोले. शान्ति०
इडरगढ पर हर्ष से मुज मनडां जीले २

दर्शन करनसे भवि भावसे,
युं जैजै बोले शान्ति०

भक्ति में धून लगावो,
 नहि मिले ए देन अमोले २
जगमें कोई सुख नाहि,
 जिन प्रभुके दर्शन तोले शान्ति०
आतम कमल भवि दर्शसे,
 निज दिलडा खोले २
धारू हु नाथ जिसे प्रेम,
 सूरि लब्धि बोले शान्ति०

५१ श्रीमहावीर जन्म पालणा गीत.

(राग-त्रितात्र जय जयवंती)

पालणे झुलत प्रभु वीर जिणंदा,
 झुलना झुलावे श्री त्रिशला मैया.
 पालणे० १

रत्नकनक मय पालणुं सोहे,
मंगल गावे सब देव देवैया.
पालणे० २
मोर मेना और पुतली जडिंदा,
गीत गावत तिहां किन्नर गवैया.
पालणे० ३
त्रण ज्ञानके धारी जिनवर,
जग मायामें नांही नचैयां.
पालणे० ४
भर योवन में संजम पाये,
रमा रमणीका स्नेह हरैया.
पालणे० ५
आत्म कमलमें लब्धि ध्यावे,
धन्यहो! जिनवर शिव वसैया.
पालणे० ६

५२ श्री सीमंधर जिन स्तवन.

(जाके मधुरा हा कानाने)

विदेह क्षेत्र जाकर चेतन, सीमंधर भेवो
भविक तुमे सीमंधर सेवो.
ए जिनवर मुज दिलमें भावे,एदेवाधि देवो
राग द्वेष अरु मोह मीटावे,
पारकरे भव खेवो ॥ १ ॥

दुख हर सुख कर जिनवर सेवा
जेवो न मीठो मेवो
ते लेवा मन, तलसरह्युछे
समय मळो मुज एवो ॥ २ ॥

चरण करण मन धरण हेवा
लेवा लेवा जिनवर सेवो,

दिनमणी गुण खाणी जिनवर भजकर
नर भव लाहो लेवो ॥ ३ ॥

नृपति नरपति सुरपति सेवे,
हू निरभागी केवो आलसुपण नहीं दर्शन पामुं
ईच्छुं जीम गजरेवो ॥ ४ ॥

आत्म-कमल मां तप जप संजम
मांगु तारा जेवो
लब्धि सूरि निजदास बनावी
प्रगटावो एहवो ॥ ५ ॥

५३ श्रीजिन स्तवन.

(राग-एक बगला बने न्यारा)

एक ध्यान प्रभु तारा,
बने मनवा जीससे सारा (अंचली)

होनेको रंगला, कर्मोंका भगला,
शुद्ध धर्मोके द्वारा, शिवमंदिर प्यारा
इतना उंचा रंगला होवे, मानु आतम प्यारा,
ध्यानको धरके, ज्ञान वादनपर,
फुले फले चीत हमारा एक. २
मडाण हो गुणोंका, आत्ममें प्यारा,
ध्यान दिलको भरके जीनको,
लब्धिमें सुख पाई एक ३

५४ श्रीजिन स्तवन.

(राग-हेजी हेलो हेलो कोई गजग लेखो)

गालो गालो गालो . गुणी गुणको गालो,
श्री जिनवर की म्हेर मीलाई. गा०
पाई आनद केरी छाया, गालो

लाई रंगका रेला, बनो प्रभुका चेला,

ये दुनिया दिवानी जाणी जगको फानी

श्री प्रभुमें दिल डाली,

चित भावों की लाली. गालो.

ज्ञान गुणाली ध्यान गुणाली,

कर्म हठे है मुज छेके. गालो.

ये ताजा ध्यान जिनेश्वरका,

ये शरणा लेना श्री जिनका. गालो.

जो सुज गइ हो अन्तरकी,

तो पावे आतम कमल लब्धि. गालो.

५५ सामान्यजिन स्तवन.

(राग-नदी किनारे बेठके आओ)

ज्ञान वाहन पर चढकर आवो,

अध्यातम दिल लावो.

जिनका पल पल ध्यान धरीने,
निज करम को कटावो. ज्ञान. १
तुम बनजावो आतम राजा,
सुमति बनुं में रानी,
एक मेक हो चेतन हम तुम,
शिवपुर मार्ग सोहावो ज्ञान. २
केवलज्ञान का भाव जगा कर,
भव वनको ही दहावो.
आत्म-कमलको सुख खीलाकर,
लब्धि सूरि सुख पावो ज्ञान० ३

५६ श्री चंद्रानन जिन स्तवन.

(राग-पुजारी मोरे मंदिरमें आवो)

प्रभुजी मन मंदिर में आवो,
ज्ञानकी सरितामें आकर दिलको
बहावो प्रभुजी०

तेरे आगे मैं करूं प्रार्थना,
भवदुखको दहलावो,
कर्मको वारो भविजन के तुम
शिवके सुख दिलावो प्रभुजी० १

दिल हम उठरह्यो क्यों प्रभुजी,
ये वातन समजावो,
ज्युं मन ठाम ए आवे जिनजी,
ए मुज मार्ग बतावो प्रभुजी० २

श्रीचंद्रानन चंद्र ज्युं शीतल,
शीतलता, उपजावो,
आत्म-कमलमें दर्शन प्याली,
लब्धिसूरी को पीलावो
प्रभुजी० ३

५७ श्री महावीर स्वामी स्तवन.

(राग रावआई है नयारंग जमाने के लिये)

यहा आते है प्रभु धर्म बताने के लिये,
ज्ञान देते है प्रभु मोह हटानेके लिये

अच टे.

दिल राजी हुआ है, प्रभुजीकी सुनके दुआ,
जगीयामें फिरते, शांति जमानेके लिये॥१॥
बेसी अजब है सुरत, दोनेंह दिलको मोहत
खुशी क्या है देनेकी, माया मिटानेके लिये२
जहा जाते है प्रभु, लोक सुं फरमाते है॥
प्रभु महावीर आये, धर्म उठाने के लिये ४
सिद्धारथ के दुलारा, त्रिशला का प्यारा है॥
सबको दिलाता अमर, मुक्ति मिलानेके लिये५

आत्म-कमलमें स्वामी, तुमही विराज रहो ॥
लब्धिसुरी की भव, भीती उडाने के लिये ६

कपड वंज मंडन

५८ शांति जिन स्तवन.

(राग-शिर जावे तो जावे पण आजादी घरआवे)

शांतिजिणंद जे ध्यावे, ते दुःख कदी नहि पावे
तरवा भवथी शांति प्रभुना,
गुण निरंतर गावे ते दुःख.१
शांति शांति जपी निरंतर,
घटमां अलख जगावे. ते दुःख. २
जे जिन वरने जपे अहर्निश,
ते दुरगति नाहि जावे ते. दुःख ३
स्याद्वाद रूप अमृत सरीखो,
जे उपदेश सुणावे. ते दुःख. ४

जिनवर जपतां कर्मने खपतां,
सीधो शिवपुर जावे. ते दुःख ५
लब्धि जिनवर ध्यान धरीने,
आतम कमल विकसावे ते दुःख. ६

५९ श्री नेमि जिन स्तवन.

(राग पीलो पीलो .)

पीलो पीलो जीवराने नेमि नाम,
सुधा धाम आपे दिलने आराम,
जीवनमां मीठी मधुरा,
अमरना वर्गनी पूरा,
धरनार धरे छे नाम,
सुधा धाम आपे दिलने आराम.पी.१
देवना पण देवलाहा जीन्दगानी ना,
छे खुबीयो ए भर्या, आ लोक शालामा

प्याला ए ज्ञाने छला छल प्रेमथी पीयाकरो,
पाया करो ए अन्यने नीच कर्मने दूरहरो
ए प्रभुजीनो पेगाम सुधा धाम,
आपे दिलने आराम. पीलो० २
आतम कमल खीली रह्युं
एमा जीवन झुल्या करे,
लब्धि कहे ए सत्य मानो,
शाश्वतुं जीवन धरे,
रे जपो पल पले नाम सुधा धाम,
आपे दिलने आराम. पीलो. ३

६० श्री महावीर स्तवन

(राग-मेरी माताके शिरपर ताज रहो)

मेरे दिलमे श्रीवीर विराज रहो
ऐ सिर के सदा शिरताज रहो अंचली.

शुद्ध देवगुरु की टेक रहो,
जिन धर्म का रीत रिवाज रहो,
मुखसे जिन ए उच्चार रहो,
ओर घटमे दया का प्रचार रहो. मेरे. २

जिन राज मेरे रहीम गार रहो,
भाई भाई का दिलसे मिलान रहो,
नहि कोई किसीसे विरोध रहो,
प्रभु नाम हाजर हजुर रहो. मेरे २

तु ब्रह्मा विष्णु महेश रहो,
ओर दुनिया भेदका छेद लहो,
नहीं जगमें कुछ ही क्लेश रहो,
सब लोकमें संपत सरित वहो मेरे. ३

प्रभु गुणमे दिल मुस्ताक रहो,
ए सबका भला कर पाक रहो,

मेरे आतम कमल में नाथ रहो,
सूरि लब्धि सदा जयकार रहो मेरे. ४

६१ सुविधिनाथ जिन स्तवन.

(नेम प्रभुना चरण कमलनी लगनी अमने लागी)

सुविधिनाथके चरण कमल की,
सेवा करे वडभागी,
भर यौवन में दीक्षा लीधी,
माया ममता त्यागी,
मोह प्रकृति सबही जारी,
दुःख हरनारी सुख करनारी,
क्षपक श्रेणी अन्तर धारी,
बनी आतम गुण रागी. सुविधि. १
ज्ञानावरणी दर्शनावरणी,
त्याग दीनी अंतरायकी करणी,

ज्ञान दशासे ए कर्म वरणी,
केवल ज्योति जागी. सुविधि २
देशना द्वारा अमृत धारा,
वर्षा कर नरनारी चारा,
पुण्य धर्मका भर लिया क्यारा,
पाप दशा गई भागी. सुविधि. ३
आतम कमल को निर्मल करके,
कर्म अघाती को भी हरके,
हुए सुखी शिव रमणी वरके,
लब्धि सुरि लय लागी सुविधि ४

अंजुमर महत

८२ पद्मप्रभ जिन स्तवन.

(शा गाटे सम्फरे मयी तुम पवि)

पद्म प्रभुजी प्यारा दिलमें सदा तुमे धारा
हरो रही अंतर मल भारा,

साखी

भटक भटक भववन विषे पाया भय अपार
पुण्य वशे निर्भय करूं लिया जिणंद आधार
कर निर्भय लीया शरणा थारा २
तुम बिन और न तारक[1] मारा २
कृपानाथ, मम प्राणनाथ
प्रभु तुंही तुंही प्यारा. हरो. (१)

साखी

रटे वेदांतिक ब्रह्मको स्मरे रामानुजराम
कृष्ण कृष्ण कोई कहे मारे तुमसे काम.
एक आशी को न करीए नकारा २
करे नकारा पडे दुःख सारा २
जगत् नाथ ! मे हुं अनाथ
मम खरा शरण थारा हरो. २

---

१ तरनारा, .२ तारा

साखी

आत्म कमलमें जिन तुमे रटी रहा दिन रात
मुज घट अतर लब्धिको करो विभु निख्यात
तारक विरुद तुमे प्रभु धारा २
कायम रहेगा नहि बीनतारा २
कृपानाथ मम ग्रही हाथ
करो शिव रमणीहारा. हरो. ३

६३ श्री चंद्रप्रभ स्तवन.

(राग कव्वाली)

चदा प्रभुजी प्यारा मुजको दीयो सहारा.
तुमे कर्म काष्ट वारा उसने हमे है मारा.
चदा० १
में त्राही त्राही करता चरणों वेरे पडता.

क्यों नहि दुःखोंको हरता महा मोह सेहुं मरता
चंदा० २

करुणा समुद्र तु है नहि तुजसे कोई आला.
मुज मन वना है पक्षी तुम गुण गणों में माला.
चंदा० ३

नरकादिको में रुला तुम नाम कोजो भूला.
उसके वीना सहारे पाया है दुःख अमूला.
चंदा० ४

अब पुण्य वायु आया, करमे विवर दिखाया
सम्यक्त्व चित्त धारा तब पाया है तुम
देदारा चंदा० ५

आतम कमल दिनेश्वर दुर्लभ प्रभु जिनेश्वर
निज शक्ति संपदा दो शिशु लब्धिको
बचालो चंदा० ६

६४ श्री संभवनाथ स्तवन.

(भैरवी आवी मूर्ती मोहनगारी ए राग)

महा मूर्त्ति मंगल कारी,
गुण गार संभव तारी अंचली
धामको हारी धामको धारी,
अन्वरीज कारी कीर्ति तारी,
ज्ञान ध्यान भंडारी महामूर्त्ति १
रागको टारी द्वेष को वारी,
१ कर्म रिपु दल जडसे विडारी,
हो गये शिवपद धारी महामूर्त्ति. २
कर्म कटारी लगी मोहे भारी,
खींच कर मुज निर्भय कर दीजो,
निर्भय पद दातारी महामूर्त्ति ३

---

१ कर्म रूपी शत्रु

अति तमकारी मोह निशि भारी,
महेर करी उसको दूर कीजो,
महा तेज मनोहारी. महामूर्ति. ४
आतमतारी कमल ज्युं न्यारी,
एसी मुजे बनादो होऊं,
शिव लब्धि भर धारी. महामूर्ति ५

६५ अभिनंदन जिनपद.

(राग-ठुमरी)

ध्यान धरले हो प्यारे मोहनीया
अभिनंदन सुखकारारे,
प्रभु गुणका कोउ पार न पावे,
इंद्र मुनींद्र पण हारा के,
किस तरह गुण गावुं मेरे जिनका,
न करे काम मन मारारे ध्यान० १

गुण गाने को गुणी मन मोरा,
तलस रहा अति भारारे,
बाल सागर का माप करे ज्युं,
कलम त्युं करमें धारारे ध्यान० २

लाख चोराशी योनि जिनवर,
भटक भटक दुःख धारारे
आनंद मे अब शरण लई प्रभु,
दुःख का हुआ निवारारे. ध्यान० ३

मुज मन कमल में तुज को धारा,
तु मुज हृदय का हारारे
निश दिन घट में मनाउं तोरा मुजरा,
शिवपद लब्धि आधारारे. ध्यान० ४

वढवाण केम्प

६६ श्री वासुपूज्य जिन स्तवन.

(राग-पंजाबी ठेका)

आनंद देती प्रभुजीकी मूर्ति अजोड,
दर्शन करीए मीटे सब कर्मोकी खोड आ०
अंचली०

सब देवन में देव निराला,
षट् जीवनके हूए प्रतिपाला[1]
महा मिथ्यात्वका बंधन तोड आनंद. १
राग द्वेष को जडसे जलाया,
ज्ञानामृतका प्याला पीलाया,
राज पाट दीया छीनकमें छोड आनंद. २
साधु सेवा मैत्री भाव सीखाया,

---

१ रक्षक

ममता त्यागी धर्म दीखाया,
एसे प्रभुजी मेरे शिरका मोड[1] आनंद. ३
धन्य जनम प्रभु दर्शन पावे,
नित्य उन्नत गुण ठाणे ठावे,
मिला मानु उसे लाख करोड आनंद.४
काल अनंत स जगमें रुलाइ,
तत्व ज्ञान सह दर्शन पाइ,
मनरा चाहे मिलु जिनजीको दोड आनंद ५
वासुपूज्य जिन सुख कर स्वामी,
वढवाण केम्पमा दर्शन पामी,
मिलगया मानु मुझे शिवपुर रोडे[2] आनंद ६
आत्म कमल जिन लब्धि दाता,
तार तार मुज भव दुःख त्राता[3],
भव भ्रमणाका पोगलफोड आनंद. ७

१ मुकुट २ रस्ता, ३ रक्षक

६७ श्री शांतिनाथ स्तवन.

(राग- सरफरोशी की तमन्ना)

पूजलो श्री शांति स्वामी,
शांति के आगार है,
छब निराली सब से आली,
धर्म के दातार है. पूजलो० १
इल्म[२] है लाइन्तहा और त्याग बेशुमार है,
बहार है बे अंत जिसमें,
ताकत का नहि पार है. पूजलो० २
नही राग है नही द्वेष जिसमें,
सबर[३] बे सिमाल है,
इससे नही देव आलाँ[४],
एसा मेरा ख्याल है पूजलो० ३

---

२ अनंतज्ञान ३ अनुपम संतोष ४ उत्तम

सिफ्त का नहि व्यान होता,
आप की अय शिरताज,
काबीले देदार सुरत,
देखकर करता हु नाज पूजलो० ४
आत्म लब्धि वश कीनी है,
न इनसे कोई देदार है,
जिसने इनके चरण सेवे,
उसका बेडा पार है. पूजलो० ५

६८ सामान्य जिन पद.

(રાગ-ગોરે મોટા બુલાલો મદીને મુઝે)

मेरा जीव कर्मोंमे प्रभु हार गया
मेरा मन है माया में मस्तान भया

---

५ शक्तिका ६ दर्शनीय मूर्ति ७ आनंद

शेर

हिंसा कीनी में झूठ बोला चोरीयो कीनीबहु
लालच सरितामें डूबाहूं जिनचरण शरणाग्रहुं
मेरा जीवन करीग्रो जिणंद नया. मेरा १
दान नहीं है शील नही है तपभी कीया नांहि
भावना का लेश नाही तुं सबी जाणे सही
तेरे आगे मुजे बहुत आती हया. मेरा २
नीचसे भी नीच कामो कररहा में नित्य हुं
तेरा बनी जिणंदजी में बहोत्त गुनेगार हुं
मोहे शुद्ध करो मोपे लाइ दया मेरा. ३
लाख चोराशी फीरे फिरभी बडा मुश्कील है
एसाजनम मानवभया फिरक्योंभया गाफिलहै
मेनें युंही ये रतन गुमाय दीया. मेरा. ४
नाम तेरा काम आता और माया जाल है
उस के सहारे पालीया शिवपुर सो निहाल है

तेरा नाम रटन दिन रात कीया मेरा. ५
आतमकमल लब्धिमिले जिनराजहृदयआणीये
जिनरागमेजीवनकटे सोजीवनमूननपाणीये
मेरे जीगरमें जीनजीने स्थान लीया मेरा.६

६९ प्रभु प्रार्थना स्तवन.

(राग-कव्वाली)

लगी है चाह दर्शनकी,
मिटादोगे तो क्या होगा ! अचली.
अनंत ज्ञान दर्शनकी जहां हस्ती रही जाती
एसा घर मुक्ति के सुखको
दिखा दोगे तो क्या होगा. लगी १
अनंत जन्ममरणोंमें भटकत फरही फिरती
अनंते पराक्रमी भगवान
निकालोगे तो क्या होगा ! लगी. २

इसी संसार सागर में मेरी नैया डुबी जाती
मल्लाह[1] वनकर मुझे स्वामिन् ?
उगारोगे तो क्या होगा ! लगी. ३
राग और द्वेष प्रभु ! इनको
उडा दोगे तो क्या होगा. लगी. ४
मेरेमें ज्ञान दर्शनकी महा "लब्धि" कहीजाती
पडा है कर्म का पडदा
उडादोगे तो क्या होगा ? लगी. ५

७० पार्श्वजिन स्तवन.

(राग भारतका डंका आलममें)

शुद्ध दर्शन देकर शिवपुरका,
दिखलाया द्वार जिनेश्वरने

---

१ नाविक.

एक पलमें पाप विनाश किया
भवी जनका पार्श्व जिनेश्वरने. अंचली
जब काष्टमें जलता नाग दीखा
समजाया कमठ योगीश्वरको
जलते को काष्टसे बहार किया
सुनवाया मंत्र जिनेश्वरने १

सुन मंत्र को वो धरणेंद्र हुआ
नवकारका महिमा खुब किया
दे दर्शन भवसे पार किया
भवी जनको पार्श्व जिनेश्वरने. २

दुनिया दोरंगी छोड दीनी
प्रभु पाये शुभ संजम धनको
तप करके घाती जलाय दीया
लिया केवलज्ञान जिनेश्वरने. ३

प्रभु केवल पा उद्योत किया,
जग जीवोंका उद्धार किया
अंधेर हरा तिरि सुर नरका
उपकारी पार्श्व जिनेश्वरने ४
शुभ आत्मकमल में ध्यान धरी
शैलेशी करण विषे विचरी
जा मुक्ति शिव संपद को लिया
"सूरी लब्धि" पार्श्वजिनेश्वरने ५

७१ श्री महावीर जिन स्तवन.

(राग-मथुरामें सही गोकुलमें सही)

मुज मनमे तुंही मुज तनमें तुंही
में सदा रटुं जिन तुंही ने तुंही
अबही नही तो कबही सही
प्रभुदर्श दिखावो कहींने कहीं (अंचली)

लाखों को तारे थें जिनवर
अब हमको भी तारो दिलवर
हम प्यासें हैं प्रभु शिव सुखके
हम चरण दीखादो कहीं न कहीं मुज १

तुम नाम रटन दिन रात करू
तुम ध्यानमें मस्त सदा ही फीरुं
उम्मेद है हमको तारोगे
प्रभु कर्म हरोगे कहीं ने कहीं मुज. २

आत्म कमलमे प्रभु सीमरणसे
सूरि लब्धि का होय निकाम सदा
हम कर्मोका मन चुरा करो
प्रभु दर्श दीखाना कहीं ने कहीं मुज.३

——

नाडलाईगढ.

७२ नेमिजीन स्तवन.

(राग-जैनधर्मका बुलंद सितार झंडा उंचा)

नेम नाथ प्रभु सुखकर प्यारा
भवसे तारण करो हमारा
नाडलाई पर्वत पर राजे
भवि जनोंके हृदयमें छाजे
प्राण जीवन्न प्रभु तुं है मारा
भवसे तारण करो हमारा. १

ब्रह्मचारी प्रभु जग विख्याता
तुं ब्रह्मा विष्णु शिवत्राता
अष्टा दश दूषण में वारा
भवसे तारण करो हमारा. २

पशुओंका खुब रक्षण कीना
　　लग्न भावमें दील नहीं दीना
राजीमतिसें किया किनारा
　　भवसे तारण करो हमारा. ३

संजम धर घर घर पर फिरके
　　दोष रहित प्रभु गोचरी करके
जडसे घाति कर्म निडारा
　　भवसे तारण करो हमारा ४

केवल धर हरके जग दंदा
　　ज्ञान प्रचारका लेलिया धंधा
आप तरे प्रभु अन्यको तारा
　　भवसे तारण करो हमारा. ५

आतम कमलमें तेरा वासा
　　होनेगे प्रभु आनंद खासा

लब्धिसूरी में रंग हे तारा
भवसे तारण करो हमारा. ६

७३ महावीर स्वामी स्तवन.

(राग-में बनकी चिडीयाँ बन बन बोलुंरे)

में प्रभु भक्तिमें चित्तको लगाकर डोलुंरे
में दास चरणका बनके दिलको खोलुंरे
में वीर वीर गुण गावुं नहिं कर्म फंद वसआवुं
प्रभु चित्त चित्तमें मित्त मित्त बिनपाये
कबहुं न छोडु लगाकर डोलुंरे. १
में नाथके ध्यानको धरके जिन जिन बोलुंरे
में सुंदर भावको भजके अंतर खोलुंरे
में आत्म कमलमां ध्यावुं
शुभ लब्धि निज घट पावुं.

तुम न्हाल न्हाल धरु ख्याल ख्याल
बिन पाये करहुं न छोडुं
लगाकर डोलुंरे २

७४ इडरगढ शांतिजिन स्तवन.

(राग-प्रेमकी कहानी म्ली सुनत सुहावे)

शांति जिणंद मुजचित्त सोहावे
प्रभु दीलावे ज्ञान खजाना
जन्म मरणकी रीतीया छुटाई. शांति० १
प्रभु हटावे मोहका माला
लाख चोरासीकी पीर हटाई. शांति० २
धर्म मात्र की रीत निराली
जो दील लावे अमर हो जावे. शांति० ३
आत्म कमल में ध्यान लगाई
जो गुण गावे मरण नहीं शांति० ४

लब्धि सूरि निज ज्योति लगाई
भव दुःख हरके शिवपुर जावे. शांति० ५

७५ पार्श्वजिन स्तवन.

(राग-बाबा मनकी आंखो खोल)

दादा हरदे मेरी पोल दादा हरदे मेरी पोल
अंचली०

मेरेमें हो तुम गुण वासा,
तेरी एक घर बेठे आसा
ज्ञान शलाका लेकर नेत्र,
खोल सके तो खोल. दादा०

ज्ञान गुण है प्रभु में भारी,
क्षायिक दर्शन चरण के धारी
तन मन काया स्थिर बनाकर,
मुक्ति लीना अणमोल. दादा०

सब देवन में नाथ तुम्हारी,
मूर्ति लागे मुज को प्यारी
आतम कमल में ध्यान लगाकर,
लब्धिसूरि रंग रोल दादा०

७६ जीनवाणी स्तवन.

रटो रटो जिनकी वाणी,
भव से पार लहो प्राणी. रटो०
प्रभु में दिल को जो धरते,
नहीं रहवे कर्म के दरदी
हरो भव भय की शरदी तजो
मोह के हैं दुःख दानों. रटो०
आत्म कमल में गुण का भरना,
लब्धि सूरि शिवपुर संचरना
कर्म जोर को करदो फानी,
तजो मोह को जो दुःखदानी. रटो.

७७ वीरमगाम शांति स्तवन.

(राग-आजा प्राण बसो मोरे मन में)

प्रभुजी आन बसो मोरे मन में

राग न जिनमें द्वेष न जिनमें

तुम बिना देव न और सुहावे

तेरे दर्शन नयन करन जब

हर्ष भयो अति तनमें. प्रभुजी०

वीरतीयां जागी जग भारी

सब जीवन की रक्षण कारी

इसलिये शिवपुर वसावे,

तुंही वसा नयनमें. प्रभुजी०

आत्म कमलमें हुई खुमारी

मति इससे सुधरे हमारी

वीरमगाम सूरि लब्धि गावे,

तुंही वसा नयनमें. प्रभुजी०

७८ आदिजिन स्तवन.

नाभीके दुलारे प्यारे
मेरे मात मरुदे झुलना झुलावे,
हाथमें रेशम दोर नाभी.
नाभीजीके आगणे वाजे घुघरना घम घोर.
इन्द्र इन्द्राणी सेवे जिनको,
सुमगळाकी जोड नाभी.
जिनजीके ध्याने नासे,
करम कठोरही चोर.
देव देवी मील मंगळ गावे,
करती दोडा दोड नाभी.
प्रभु भक्तिसे भव दुःख भागे
हटे मोहका जोर.
लब्धि सूरि शुभ भावे, गावे
मीटे कर्मकी खोट नाभी.

७९ सामान्य जिन स्तवन.

(राग-गंधारीताल त्रीताल झुलना झुलाय आवोरी)

दिलडां मिलाय आवोरे दिलडां मिलाय
जिनजीको भाली हो जय जय बोले सैंया
जय जय बोलो झुकझुक हांजीयरां दिलडां.
जानी जानी फानी ये दुनीयां तलसतने हा.
अबहु न पाये जीन मनवा दिलडा मिलाय
आवो आवो प्यारे मंदिरीयां बरसतमें हा.
धरशु लब्धि शिव चढवा दिलडा मिलाय.

८०(कच्छ) अंजारमंडन स्तवन.

(राग-मारु वतन आ मारु वतन)

प्रभु वंदन करुं प्रभु वंदन
म्हालु लागे मने प्रभु वंदन. अंचली

वासु पूज्य स्वामी शिवसुख गामी
आपो आपो प्रभु त्रण रतन प्रभु १
आजु बाजु सोहे धर्म जिनेश्वर
आदि प्रभुजी करे दीलडुं हरण प्रभु.२
काम कषाय ने दूर निवारी
कापो कापो प्रभु कर्म फंदन प्रभु. ३
सुख करनारा दुःख हरनारा
याचु भवो भवो तुमही शरण प्रभु.४
अनादि कालथी भवबन भटक्यो
टालो टालो प्रभु भव भ्रमण प्रभु. ५
संवत १९९४ साले
अजारे पाया प्रभु दर्शन प्रभु. ६
सूरी लक्ष्मण कीर्ति गुणगाई
चाहु चाहु प्रभु शिव सदन प्रभु. ७



८१ भद्रेश्वरजी स्तवन.

(राग-काली कमली वाले तुमपे)

भद्रेश्वरमां वीर प्रभुने प्रेमे प्रणाम
वीर प्रभुजी कामण गारा,
ध्यातां हृदये हर्ष अपारा.
वंदु वारं वार प्रभुने० १
वीर प्रभुजी प्रणमो भावे,
दुःख दोहग सब दूर पलावे.
नावे कदी संताप प्रभुने० २
माता त्रीशला देवी जाया,
छप्पन दिग्कुमरी हुलराया.
गाया सुर नर नार प्रभुने० ३
सुरगिरि पर प्रभुने ठावे,

अंगुठे प्रभु मेरु रुपावे.
शक्तिना भडार प्रभुने० ४
संगम आदि ए उपसर्ग कीधा,
सम भावे प्रभु ए सही लीधा.
प्रगट्यु केवलज्ञान प्रभुने० ५
पुण्ये प्रभुका दर्शन पाया,
दिलमें आनद खुब मनाया.
याचु भवो भव सेव प्रभुने० ६
भविक कमल विकसावा काजे.
मूर्ति प्रभुकी दिनमणी छाजे
त्रण भुवन आधार प्रभुने० ७
भवसागर में नैया हमारी,
डगमगती प्रभु करदो कीनारी
साचा नाविक आप प्रभुने० ८
सूरि लक्ष्मण शिशु कीर्ति गावे,

पद पंकजने नमतां भावे.
थावे लीला लहेर प्रभुने॰ ९

८२ श्री भद्रेश्वरजी नुं स्तवन

(राग-जावो जावो हो मेरे साधु रहो गुरूके संग)

आवो आवो भविक जन, करो प्रभु वंदन
मूरति प्रभूनी मोहन गारी,
सोहे चंद वदन. आवो
भव त्राता प्रभु शिव सुख दाता,
करूं क्रोड वंदन. १
वीर प्रभुनी मूर्ति निरखी,
हर्षे भर्या नयन.
त्रिभुवन स्वामी गुण गण धामी,
कापो जन्म मरण. २

आशरो प्रभुजी एक तमारो,
तुमही एक शरण.
कच्छ देशमां तीरथ मोटुं,
भविक मोद करण. ३

भरी कचोळां केशर केरां,
माहे गोळी चदन
विध विध जाति पुष्प चढावी,
करो भवि पूजन ४

प्रभु भक्तिमां तान लगावी,
अर्पो तन मन धन.
प्रभु पद पकज पुजी भावे,
करो प्रभु नमन. ५

घणा समयनी चाह हमारी,
आज थया दर्शन.

क्रोड पीछों करडे एक साथे
तेम मरण दुःख कारी
कोई प्रदेशे जग नहीं खाली
जन्म मरण ज्यां न धारी भविक. ३

रंग छे पतंग जेम आ तन तेरो
विणसी जशे क्षण वारी
दार सुता सुत धन घर छोडी
जतां वनीश लाचारी भविक. ४

राजा गया महाराजा गयाने
गया छे इन्द्र मोरारी
अचानक एक दिवसे उपडवुं
आवशे तारी पण वारी भविक. ५

विषय विकारनी निद्रा लेतां
दीठी न सुखनी बारी

अनंत भव भटकी ने पाम्यो
 सुंदर नर अवतारी भविक ६
पामी समय नहि वृथा खोसो
 करी ल्यो जन्म सुधारी
सूरि कमल चरणोनो सेवक
 लब्धि कहेछे पोकारी भविक ७

(२)

(राग-ज्ञान कदी नवि थाय मूरखने.)

करवुं होयते थाय करमने करवुं होयते थाय
 जीवे जाच्यु काम न आवे;
धार्यु निरर्थक जाय करमने० १
 पाच पाण्डव महा बळवंता ने,
चरम शरीरी कहाय

वनमांही पण ते रडवडीया,
दुःखे बार वर्ष जाय. करमने० २
ज्यां जळ त्यां थळ थळ त्यां जळ छे,
भरती ओट भराय
रंक राय थई मन मलकावे,
राजा रंक थई जाय. करमने० ३
कृष्ण वासुदेव त्रिखंड राणो,
जेने पग मूके खमा खमा थाय
जराकुंवर थी ज्यारे विंधाणों,
त्यारे जळ विना जीव जाय. करमने० ४
जेने घरमां खावा खूटयुं छे ने,
लोकोनी ठोकरो खाय
एवो पण जो नृप बने तो,
लाखो थी वंदाय. करमने० ५
सुभद्रा जेवी अति सतीना,

माथे कलंक पड्युं थाय
तांतणे चालणी थी जल काढी
द्वार, उघाडी पंकाय. करमने० ६
जे घर घोडा हाथी झुले,
परिवार गण्यो न गणाय
तेवो खाली खंडेर थया ने थली,
कुतरा त्यातो बीआय. करमने० ७
राजा हरिश्चंद्र राज्यनो धारी,
प्रतिज्ञामा ज्यारे पकडाय
वनमा कुवरे खाना माग्यु,
तेपण आपीन शकाय करमने० ८
जे तन विजळी सम अति झलके
ज्या जड नेत्र ठराय
ते तन ज्यारे रोगे पीडीया
तेवो देखी न शकाय करमने. ९

सनतकुमार चक्री रुप जाणो
जेने जोवा देवता आय
गर्व कर्यो त्यारे पलकमां पलट्यो
थई गई रोग मय काय करमने. १०
सूरि कमल चरणो ना प्रतापे
लब्धि थी कर्म कलाय
वीतरागना वचन प्रमाणे
चाले तो तेथी छूटाय करमने. ११

(३)

(राग-मान मायाना कर नारारे)

बाह्य शत्रु का नाश करायारे
पण अंतर शत्रुसे हराया
छायी मोह वादलकी छायारे
बनी केसी करमकी माया अंचली.१

करमे कुटाया भरमे भूलाया
नरक निगोदे रुलाया
करी मोह माया दुःखे हटाया
सुख नहीं लेश तुने पायारे. बनी २
मोहके मद से हो चकचूरा
न रहा पापसे अधूरा
क्रूर करम करी झूले चेतनजी
लाख चोराशी झुलायारे बनी ३
यह जग पासा मानो तमासा
छ सात दिनका वासा
क्यों वहा फसते रंक बिचारे
जूठी यह सब बनी मायारे. बनी, ४
अभेद्य स्याद्वाद वप्र पर चढके
नव तत्व महेल निरखायारे. बनी. ५
आत्म कमल विकाशक गुण से

वीर्य लब्धि विकसाया
सो बहादूर नर जाणो जगत में
जेने अंतर शत्रुको हरायारे. बनी ६

(४)

में दिव्य नयन थी जोई,
दुनिया नहि कोईनी होइ.
स्वार्थनी जाळ मां रोइ,
निज गुण सघळा दिया खोई
अंचली०

अहीं होय माता तेतो बीजे भवे नारी
पिता होय पुत्र और पुत्र थाय वैरी
करमनी माया एम जाणे न मूरख सोई.
में दिव्य० १

आज होय राजा तेतो काले थाये रंक
अजब सरीखो एतो दुनिया नो ढंग
अथिर जगत मांही,
स्थिर नवी दीठु कोई. में दिव्य० २

मात पिता सुत बेनी भाइने भोजाई
अंत काळे अळगु रहेवानु सौ भाई
पोताना स्वार्थ माटे
मगपण नासे धोई. में दिव्य० ३

मनुप जनम पाई करी न कमाई
नरभव रतन भी उमर जो खोई
क्षण नाशी जगत में
गाफिल है नर बोई में दिव्य० ४

तप जप करी श्रुत चारित्र आराधी

आतम कमल विषे लब्धि साधी
ज्ञानीना चरण जई दुनिया द्यो धिछोडी.
सं दिव्य० ५

(५)

(चाल-सुणो चंदाजी)

सुनो चेतनजी! आतम ज्ञान विना,
सवि वातो खोटी ॥ नहीं ज्ञान थकी कोई
चीज मोटी ॥ सुनो चेतनजी ॥ अंचली ॥
तारुं क्षण क्षण आयुष्य तुटे छे ॥ तारूं
अन्तर धन मोह लुटे छे ॥ तारुं अमृत
भाजन फूटे छे ॥ सुनो चेतनजी ॥ १ ॥
फस्यो आठ कर्मना फंदामां, पड्यो तेथी
गंदा धंधामां ॥ तारी धर्म नीति मळी

मंदामां, सुनो चेतनजी ॥ २ ॥ त्हें कामे व्रतपणुं वाम्यु, तारुं दिल दुराचारे जाम्यु॥ तारुं ज्ञान बधु तेमां नाम्युं ॥ सुनो चेतनजी ॥ ३ ॥ जगमाया क्षण क्षण नाशे छे, तुं चितड केम त्यां वासे छे ॥ जो ज्ञाने ए बधुं भासे छे ॥ सुनो चेतनजी ॥ ४ ॥ खरुं आतम ज्ञान जिनन्द भाखे, गुरु मुख कमले ग्रही दिल राखे ॥ रस आतम लब्धि तणो चाखे ॥ सुनो चेतनजी ॥५॥

(६)

(माला जपुं छुं तारा नामनी, मोहनजी ए चाल

वात कहुं छुं हु वैराग्यनी, सामल जो लोको ॥ तेविण आ दुनिआ होली

फागनी, सांभलजो लोको ॥ अंचली ॥
समकित सहुमां पहेलुं, ते विण सवि काज
घेलुं ॥ वातो अलेखे ज्ञान ध्याननी ॥
सांभलजो लोको ॥ १ ॥ दुनियानी जूठी
यारी, वृथा करे मारी तारी ॥ हालत बधी
छे ए हेवाननी ॥ सांभळजो लोको ॥२॥
जावुं मसाण वासे, आखर एकदिन थाशे ॥
फेर करो कां मति माननी ॥ सांभलजो
लोको ॥ ३ ॥ धर्म प्रकार बे छे, साधु
श्रावक भेदे ॥ तेमां लगावो वृत्ति तानना
सांभलजो लोको ॥ ४ ॥ आत्म कमल
विकसे, कैवल्य ज्योति निकसे ॥ लगे लय
"लब्धि" दिलो जानना ॥ सांभलजो
लोको ॥ ५ ॥

—— ——

(७) सारासार दर्शक सज्झाय

चग्यो सर्नि सृष्टीनो श्रृङ्गारहार-ऐथी मलती चाल

जुओ तमे सृष्टिमां क्या मारछे ।
ज्यां जूओ त्या एमा दुख अपार छे ॥
॥ साखी ॥
धमण चलावी श्वासनी,रही२ डसकां खाय ।
हाय हाय करी कहीं, मरण बाद कूटाय ॥
जुओ ज्यां ए दुःखना प्रकार छे ।
कहो त्या तमे शो जोयो मार छे जुओतमे॥१॥
॥ साखी ॥
जरा व्यापी देहडी, मुखथी लालो जाय ।
कानो काम करे नहीं,आंखे नांचे भलाय॥
ज्या ए दशा आववा तैयार छे ।
कहो त्या तमे शो जोयो मारछे.जुओतमे॥२॥

॥ साखी ॥

धग धगती जे धखी रही, एवी चित्ता ज्यांय।
सजन तारा शरीरने, हाथे मुकशे लाय॥
बल्या पछी राखनो आकार छे।
कहो त्यां तमे शो जोयो सार छे. जुओतमे॥३॥

॥ साखी ॥

कोई सुख आभासमां मानी रह्या अति सुख।
मिष्ट विष नवि मानता जेमां पाछल दुःख॥
हाड मास रुधिर विकार छे।
कहो त्यां तमे शो जोयो सारछे जुओतमे॥४॥

॥ साखी ॥

पुद्गल आनंदी बनी पुद्गल दुखिया थाय।
नारक पशुनी योनिमां ज्यां त्यां गोदा खाय॥
दुःखकर ए सुखने धिक्कार छे।
कहो त्यां तमे शो जोयो सारछे जुओतमे॥५॥

॥ साखी ॥

आत्म कमलमां प्राणिया,
गुण परिमल महकाय ।
जड दुर्वास तजे थके सह गुण लब्धि सुहाय ॥
मले पछी मुक्तिनो प्रकार छे ।
आहा! आहा! एज खरो सारछे,जुओतमे॥६॥

(८)

(राग-सिद्धाचलना वासी)

अनादि जगना वासी जीवडा करीले विचार
(अंचली)
आ जगमां जीवडा कोणछे तारु,
नाहक करतो मारुं मारुं
मर्यो अनंती वार जीवडा०

आतम ज्ञान तें नही पिछाण्यो,
जडता भावे दिल आण्यो
पाम्यो दुःख अपार जीवडा०
विषय कषाय ना वासमां वसीयो,
आत्म भावमां नही दिल कसीयो
पापे थयो खुवार जीवडा०
रोष करेछे दुःखनो पोष,
तोष करे छे गुणनो शोष
सम भावे दिल धार जीवडा०
चार गतिना दुःख मां रुल्यो,
धर्म भाव तुं दिलथी भूल्यो
रखड्यो वारं वार जीवडा०
आत्म कमलमां धर्म वसावो,
उंच भावना दिलमां ठसावो
लब्धिसूरि सुखकार जीवडा०

९ उपदेश पद सझाय.

चेतन क्यों भवमें भटकता है
विषय पानकर गर्भो मे क्यों उंधा लटकता है
(अंचली)

शेर

मोहमयी यह भुमिका लगरहे दुःख के झाड
काल शिकारी बापडा देख तुं आखे फाड
नाग ज्युं उपर लटकता है विषय०
मोह लुटेरा लुटता कर रहा जहा निवास
अजगर पर सभी जीनके डाल गलेमे पास
आतम धन लुट अटकता है विषय०
भव भीतर रहता सदा राग सिंह बलवान
द्वेष केसरी भी जहा करत जीवो की हान
प्राण ले नीचे पटकता है विषय०-

लाख चौरासी रूलता होता नहीं होशियार
वार वार इस स्थानपे खाता है खुबमार
समझ कर क्यों न छटकता है विषय.
आत्म कमलमें जपलियो श्रीजिनवर का नाम
लब्धि सूरी संजम मिले जावेगा शिवधाम
फिर नहीं भवमें भटकता है विषय०

(१०)

(राग-भारतका डंका आलममें)

तुं चेत मुसाफीर चेत जरा,
क्यों मानत मेरा मेरा है. अंचली.
इस जगमें नहीं कोई तेरा है,
जो है सो सबही अनेरा है.
ये सब स्वारथका मेला है,
क्यों मानत मेरा मेरा है. १

नहीं शाश्वत तेरा डेरा है,
कुछ दीनका जहा बसेरा है.
कर्मोका जहा सुब घेरा है,
क्यों मानत मेरा मेरा है. २

ए काया नश्वर तेरी है.
एक दीन वो राखकी ढेरी है.
जहां मोहका खूब अंधेरा है,
क्यों मानत मेरा मेरा है. ३

बुरी ये दुनियादारी है,
दुःख जन्म मरणकी क्यारी है.
दुःख दायक भवका फेरा है,
क्यों मानत मेरा मेरा है. ४

गति चारकी नदीयो जारी है,
भव सागर ऊंडाही भारी है

ममता वश जहां बसेरा है,
क्यों मानत मेरा मेरा है. ५
मन आतमकमलमें जोड दियो,
लब्धि माया को छोड दियो.
गुण मस्तक संयम शेरा है,
क्यों मानत मेरा मेरा है. ६

[११]

(राग रंग तो पतंग तेरो कलही उड जायगो)

थोडी तेरी जिंदगी है क्यों तु गुमाता है
जिंदगीमें बंदगी तो प्रभुजीका नाम है.
जिंदगीमें ॥ १ ॥
विषयोंको छोड यार जोड प्रभुजीसे प्यार
ज्ञानमें गुलतान होजा यही सुखधाम है.
जिंदगीमें ॥ २ ॥

जिस्में है फनाह तेरा कहा भाई मान मेरा
विजली विकास जेसा नहीं स्थिर ठाम है.
जिंदगीमें. ॥ ३ ॥

धन,धान,मान, तान क्षणमें विनाशी जाण
डाभकी अणीपे लगे बुंद ज्यु तमाम है.
जिंदगीमें. ॥ ४ ॥

भज भज जिन देव तज सब खोटी टेव
शिवपुर धाममें फिर तेरातो मुकाम है.
जिंदगीमें ॥ ५ ॥

कमल विकासी चहेरा रहे हर दम तेरा
आतम लब्धि जो लाभे यही तेरा काम है.
जिंदगीमें ॥ ६ ॥



(१२)

राजा कन्हैया खोल रस की बूंदा परी-ए चाल

चेतन समय पिछाण,
न कर विषयन यारी ॥ अंचली ॥
शंबल को नहीं भुलना प्यारा,
स्वजन कुटुंबी नहीं कोइ थारा ॥
जूठा भाइ माई भगिनी पसारा,
अंते सभी जुदे जाण ॥ न कर ॥१॥
द्रव्य तेरा घरमें हि रहेगा,
तिरिया जन नहीं साथ करेगा ॥
स्वजन शरीर चितामें धरेगा,
जावे एकलडी जान ॥ न कर ॥२॥
ये दुनिया है मुसाफिरखाना,
आज का वास तुज यहां ही मनाना ॥

कलका नहीं है कुछ भी ठिकाना,
घर्म से लहो, शुभ ठाण ॥ न कर॥३॥
यौवन शश पर धरी जरा कुत्तिया,
काल शिकारी बाणसे जुत्तिया ॥
जरूर हणेगा तुं क्यों है सुतिया,
समज समज हेवान ॥ न कर ॥४॥
वीर चटाउ शिवपुर चल तु,
क्यों फसता जग माया में यु ॥
मिल सद् गुरूमे भत्ता मिले ज्यु,
न पडे फिर दुःख खाण ॥ न कर॥५॥
आतम कमले केवल महके,
देख देख तू कर्म को दहके ॥
ले आनंद शिवपुर में रहके,
लब्धि मिल दिलो जान ॥नकर॥६॥

———

(१३)

ओ! आ जिंदगानी मनुभवनी एळे जाय छेरे एचाल

खरे आ मानव जाति स्वाति,
जल वही जाय छेरे ॥
विवेक रूप मछली मुखमां,
आवी मोती थाय छेरे ॥ टेक ॥
विवेकहीन ज्यां जीवन जातुं,
त्यां उत्तम जल विष सम थातुं ॥
कहीं क्षार कहीं कंटक आधि कहाय छेरे
॥ खरे आ ॥ १ ॥
ते मोती मरणादि न टाले,
आ मोती दुःख सघला खाले ॥
जनम मरण दुःख टाली,
शिव पमाय छेरे ॥ खरे आ ॥ २ ॥

विषय विलासे जे नर अडिया,
ते आ शुद्ध मोतीने नडिया ॥
शुभोदरमा स्थित रसो,
पिगलाय छेरे ॥ खरे आ ॥ ३ ॥

कषाय तापो वहार न काढे,
तेतो मोती आब बगाडे ॥
श्याम वर्नी नहीं कोडी,
किम्मत पाय छेरे ॥ खरे आ ॥ ४ ॥

तुच्छ आशा सुख झरणे मोही,
सुख सागरनी लेहरो खोई ॥
क्षीर सागर दइ साटे,
लवण लेनाय छेरे ॥ खरेआ ॥ ५ ॥

आत्म कमल ज्या निर्मल थातुं,
त्यां आब तेनुं चढियातु ॥

लब्धि आव ने मली,
जगत पंकाय छे रे ॥ खरेआ ॥ ६ ॥

(१४)

(कुबजाने जादू डारा-ए चाल)

जिया मोहने जग भरमाया,
अब तुं छोड जगतकी माया
॥ जिया ॥ टेक ॥
कोह लोह के फंदको छंडी,
तजदे हरामी माया ॥
मान नादान को तज मेरे प्यारे,
बूरी है इनकी छाया ॥ जिया ॥१॥
एक एकने करट आदिको,
गति नरक में फसाया ॥

चारों के वश पडकर चेतन,
वृथा तें जनम गमाया ॥ जिया ॥२॥

हास्य रति और अरति काढी,
मोह मिथ्यात्व हटाया ॥
समकित मोह और मिश्र मोह को,
तज तीन वेद पराया ॥ जिया ॥३॥

वेद विषे क्यों अधा होकर,
नाश करे यह काया ॥
इस पापीसे कामी जनोंने,
इह पर भव दुःख पाया ॥जिया ॥४॥

भय जुगप्सा शोक न कर तु,
ये है दुनिया दुःख दाया ॥
इस पयडी का सग निवारो,
तब हस्थ शिव सुख आया ॥जिया॥५॥

अनुभव सुखके टालन हारे,
    क्यों दिल इनमें ठाया ॥
लब्धि जिनवर चरण कमल को,
    पाया सो नही गभराया ॥जिया ॥६॥

(१५)

(गझल)

बनी मिट्टी की सब बाजी,
    उसीमें होत क्यों राजी ॥ अंचली ॥
मिट्टीका है शरीर तेरा,
    मिट्टीका कपडा पहेरा ॥
मिट्टीका महेल रहा छाजी,
    उसीमें होत क्यों राजी ॥बनी०॥१॥
घरेणा मिट्टीका तेरा,
    है मिट्टी का पलंग प्यारा ॥

तेरा मिट्टी का है बाजी,
उसीमें होत क्यों राजी ॥बनी०॥२॥
जगत में वस्तु है जो जो,
मिट्टीमें सब मिले वो वो ॥
इसीमें क्यों बना पाजी,
उसीमें होत क्यों राजी ॥बनी०॥३॥
दशा निज आत्म की शोधो,
जगत मायासे मन रोधो ॥
यही एक बात है ताजी,
उसीमें होत क्यों राजी ॥बनी०॥४॥
कहे लब्धि सदा सेवो,
जिनाधिराज शुद्ध देवो ॥
बनो शिव सुख के भाजी,
उसीमें होत क्यों राजी ॥ बनी० ॥ ५ ॥

पू० पा० आचार्य देव श्रीमद्
विजयलक्ष्मणसूरीश्वरजी महाराज
के शिष्य रत्न मुनि श्री
कीर्तिविजयजी विरचित

-॥ नूतन गहुंली संग्रह ॥-

गहुंली नं० १

पू० पा० विजयानंदसूरीश्वरजी महाराज की
(राग-सिद्धाचल के वासी)

विजयानंद सूरिराय
गुरुने प्रातः प्रणाम
पंजाब देशे लहेरा गामे
शुभ योगमां जन्म पामे
क्षत्रिय कुळ मोझार गुरुने प्रातः प्रणाम १

बाळपणे वैरागी थइने
ढुंडक मतमा दीक्षा लईने
सुत्र कीधो अभ्यास
गुरुने प्रातः प्रणाम २

सत्य तत्वोनी शोध करता
साचा तत्वो हृदयमा धरता
झट कीधो स्वीकार
गुरुने प्रातः प्रणाम ३

विहार करीने गुजरात आवे
शुद्ध मने संवेगी थावे
गुरु बुटेराय धार
गुरुने प्रातः प्रणाम ४

पंजाब आदि देशो फरीने
अनेक संकटो आगे धरीने

कर्यो बहु उपकार
गुरुने प्रातः प्रणाम ५

विलायत आदि देशो जाणे
नाम आत्माराम बखाणे
अजब पुण्य प्रकाश
गुरुने प्रातः प्रणाम ६

सुंदर ग्रंथनी रचना कीधी
मिथ्या मती ने दुरे कीधी
ज्ञान तणा भंडार
गुरुने प्रातः प्रणाम ७

संवत १९५२ वर्षे
जेठ सुदी आठमने दिवसे
पहोंत्या स्वर्ग दुवार
गुरुने प्रातः प्रणाम ८

देशना लब्धि देजो प्यारा
सुंदर लक्षण अंगे सारा
कीर्ति तणो नहि पार
गुरुने प्रातः प्रणाम ९

गहुंली नं. २

(राग-सिद्धाचल शिखरे दीवोरे)

विजय कमळसूरी रायारे
गुरुजी गुणना दरीयारे.
धन्य धन्य तस पिता मायारे,
गुरुजी गुणना दरीयारे.
देश पंजाब गामे सरसारे,
गुरुजी गुणना दरीयारे.
क्षत्रिय कुळे जन्म पायारे.
गुरुजी गुणना दरीयारे.

बाळवये संयम वरीयारे,
गुरुजी गुणना दरीयारे.
लई चारित्र जगमां विचरीयारे,
गुरुजी गुणना दरीयारे.
गुरु ज्ञान ध्यानमां पूरारे,
गुरुजी गुणना दरीयारे.
कर्म अरि जीतवामां शूरारे,
गुरुजी गुणना दरीयारे.
राज नगरे संवेगी दीक्षा पायीरे.
गुरुजी गुणना दरीयारे.
गुरु धार्या लक्ष्मी सूरि निर्मायीरे,
गुरुजी गुणना दरीयारे.
पाटणमां सूरि पद पायारे,
गुरुजी गुणना दरीयारे.
नाना गामे उपकारे विहरीयारे,

गुरुजी गुणना दरीयारे.
शांत मुद्राथी अति सोहेरे,
गुरुजी गुणना दरीयारे.
जोई गामना सघो मोहेरे.
गुरुजी गुणना दरीयारे.
महाव्रद छट्ठ अति कारमीरे,
गुरुजी गुणना दरीयारे
जलालपुरमां देहने चिरमीरे,
गुरुजी गुणना दरीयारे.
सूरि लक्ष्मण कीर्ति नमे भावेरे,
गुरुजी गुणना दरीयारे.
गुरु मूरतिने चित्तमां वसावेरे,
गुरुजी गुणना दरीयारे.

गहुंली नं० ३

पू० आचार्य देव श्रीमद् विजयलब्धि सूरीश्वरजी महाराज की

(राग-दिवस दीपे आज मंगळकारी)

साहेली मोरी आज सुरीजीने वंदो
जेथी टळशे भवजळ फंदो. साहेली. १
गुरु समता रसना दरीया,
गुरु ज्ञान गुणे करी भरीया.
संसार समुद्रथी तरीया साहेली. २
ज्ञान ध्यानमां चित्तने जोडे,
कर्म बंधने पडता तोडे.
वळी प्रमत्त दशाने छोडे साहेली. ३
शास्त्र रटनमां सुरीजी रसीया,

आत्म रमणतामा छे वसीया.
मोह मायामां नहि फसीया साहेली. ४
स्यादवाद शैलीना छो ज्ञाता,
भवजळ डुबता जीवना त्राता.
शुद्ध समकित ना छो दाता साहेली ५
एक विध संयम पालणहारी,
द्विविध देशना दो छो सारी.
मन वच काय त्रिगुप्ति धारी साहेली. ६
विकथा चार दूर परिहरता,
पंच महाव्रत शिरपर धरता.
षड जीव कायनी रक्षा करता साहेली. ७
सात भयोना टालणहारी,
आठ मदोना वारणहारी
नव ब्रह्मचर्य गुप्ति धारी साहेली. ८
दस विध यतिधर्म वहनारा,

अग्यार अंग चित्त धरनारा.
बार उपांगने जाणनारा साहेली. ९
तेर काठीया दूर करनारा,
चौदमा गुणस्थाने चढनारा.
सिद्ध पंदर भेदो जाणनारा साहेली. १०
सोल कषायने दूर मूकनारा,
सत्तर संयम शुद्ध वरनारा.
सहस अढार सीलांगना धारा साहेली ११
ओगणीश काउस्सग दोष निवारा,
विंशती स्थानक आराधनारा.
एकवीश श्राद्धगुण कथनारा साहेली १२
बावीस परिसहने जीतनारा,
त्रेवीश विषयना दोष हरनारा.
चोवीश जीन आणा वहनारा साहेली. १३
"लब्धिसूरीश्वर" नमतां भावे,

दुर्गति पडतां दूर हठावे.
तस कीर्ति गुरु गुण गावे साहेली. १४

गहुंली नं० ४

(राग-आवो आवो पासजी)

बेनी तमे लब्धि सूरीशने वंदोरे
जेथी मळशे शिवसुख कंदो. बेनीतमे १
गुरु बाळपणे संयम वरीयारे,
भव सागरथी गुरु तरीयारे.
ज्ञान गुणे करी भरीया बेनी तमे २
गुरु बाळ पणे ब्रह्मचारी,
नव ब्रह्मचर्य गुप्ति धारीरे.
संगम रमने विस्तारी बेनी तमे. ३
गुरु पच महाव्रत धारीरे,

षड जीव रक्षा करे सारीरे.
सात भयने दूर निवारी वेनी तमे. ४
अभ्यंतर बाह्य तप तपतारे,
अनादि काळना मेलने खपतारे.
शुद्ध जापने हृदये जपता वेनी तमे. ५
कंचन सम गुरु कायारे,
छोडी आव्या मोह ने मायारे.
आत्म ध्यानमां तान लगाया वेनी तमे.६
गुरु विण जगमां कोण तारेरे,
दुर्गति पडता जीवने वारेरे.
भव अटवीथी पार उतारे वेनी तमे. ७
शिष्य समुदाय सुंदर सोहेरे,
ज्ञान ध्यान थी कर्म विछोहेरे
भवि जनना मनडा मोहे वेनी तमे. ८
तत्वातत्वनो उपदेश आपीरे

सौ हृदये समकित थापीरे
पडता बचावे भव वापी   बेनी तमे ९
पुरव पुण्ये गुरुजी मळीयारे,
दुःख डुंगर सौनां टळीयारे
गुरु कल्प तरु सम फळीया बेनी तमे १०
विचरी विचरी अहीं आव्यारे
सूरी चरणोनी सेवा पायारे
तस कीर्ति ए गुरुगुण गाया बेनी तमे ११

गहुंली नं० ५

पू० पा० आचार्यदेव
श्रीमद् विजयलब्धि सूरीजी महाराज

(राग-गझल)

विजय लब्धिसूरी राया
पुरवना पुण्य थी पाया

फल्या सौ काज हमारा
मल्या जंगम सूरीराया विजय १
परिवार साथमां लाया
संघना मन हरखाया
पावन थई आज मुज काया
सूरी शीतळ मळी छाया विजय २
प्रभु आज्ञाने शिर धरता
विविध देशोमां विचरता
जगे जगे लेक्चरो करता
अजैन ना दीलने हरता विजय ३
सुरी षड शास्त्रना ज्ञाता
प्रभु वाणी सदा पाता
शुद्ध समकित ना दाता
भवि जीवना सुरि त्राता विजय ४

जलनिधि जीम गंभीरा[1]
सुवर्णसम दीपती काया
नक्षत्र गणमां शशी सोहे
तिम सशिष्य सूरीराया विजय ५
पाटणमा दीक्षा विरोधी
तोडाव्यो कायदो आपे
जिन शासन ध्वज फरकावी
जड जडवादनी कापे विजय ६
जमानावादी जुथोने
युक्तिओ देइ समजावे
सूरीयश गान करीने
सूरी पाये शिर झुकावे विजय ७
शास्त्रार्थो सुरीजीए कीधा
वादी वृंदो हरी लीधा

१ समुद्र २-३ समुद्र

सुणी विद्वत्ताभरी वाणी
    प्रणमी ते गया सीधा विजय ८
शिष्योने वांचना देता
    गच्छना छे खरा नेता
वाणी पीयूष[1] पूर वहेता
    रस हर्षे भवि लेता विजय ९
शांति सागरमां रमता
    कषायो कारमा शमता
इन्द्रिय विषय ने दमता
    गुरु कीर्तिने बहु गमता विजय १०

गहुंली नं. ६

(राग-मथुरामां खेल खेली आया)

लब्धि सूरी महाराज
    व्याख्यान रुडा सुणावो.

---

१ अमृत.

भव अटवीमां भमी रह्या छे,
शिवपुर पंथने वतावो   ज्या १
स्वरुप वतावी धर्मना मर्मनु
साचा तत्त्वो ओळखावो   ज्या २
हृदय भूमिने साफ करीने
धर्मना बीज रोपावो   ज्या ३
निडर वक्ता थई शासनमां
कुमत पंथीने हटावो   ज्या. ४
समय वादीने युक्तिओ आपी
साची श्रद्धाने करावो   ज्या. ५
अज्ञान तिमिरमा भटकी रह्या छे
ज्ञान दीपक प्रगटावो   ज्या. ६

---

१ अंधकार

शुद्ध धर्मना मार्गे चढावी
मोहना बंध छोडावो व्या. ७
अम सेवकपर कृपा करीने
ज्ञान पीयूष[२] पीलावो व्या. ८
विवेक दीपक हस्तमां आपी
कुमार्गे पडता बचावो व्या. ९
देव गुरुने धर्म ओळखावी
विरती नारीने वरावो व्या. १०
व्याख्यान वाचस्पति सुरिजी
कविओमां श्रेष्ठ कहावो व्या. ११
तारागणोंमां सोहे शशी तिम
सशिष्य सुरी सोहावो व्या. १२
अम पुरमां आप पधारी
आनंद अति वर्तावो व्या. १३

---

२ अमृत.

सर्व साहेली मळी अही आवो
आतम ज्योत जगावो व्या. १४
वाणी सुणवा तलसी रह्याछे
वचनोनी धारा वर्षावो व्या. १५
तारणहारीने लब्धि धारी
कीर्तिना कष्टो मिटावो
व्याख्यान रुडा सुणावो १६

गहुली नं० ७

(राग-सजनी मोरी)

बेनी मोरी लब्धिसूरीजी पधार्यारे
बेनी मोरी संघना हर्ष वधार्यारे
बेनी मोरी परिवार साथे गुरु आवेरे
बेनी मोरी बाळ शिष्यो साथे लावेरे

गुजरात सौराष्ट ने पंजाब
विचरी कीधो उपकार सदा०
मारवाडने दक्षिण मातो
उपकार नो नहि पार सदा०
गुरु आज्ञा थी जोधपुर शेहेरे
पधार्या गुरु चोमास सदा०
संघमां आनंद मंगल वर्ते
विघ्न सवि थाय नाश सदा०
विपाक सूत्रने मलया संदरी
प्रवचन थाय सुखकार सदा०
वकील हाकमने जैनेतर
आवे व्याख्यान मोजार सदा०
पुण्यवंत नरोना चरित्र सुणता
हृदय थाय शुद्ध वास सदा०

महा भाग्ये गुरुश्री मलीया
अजन पुण्य प्रकाश सदा०
साथमा सुरेन्द्र ने हेमेन्द्र
महेन्द्र तो, भक्तिकार सदा०
जश विजय तो गुरु यशने
वगडावे त्रिदिव मोजार सदा०
गुरु हस्ते सूरीश्वर पदने
पामी थया प्रख्यात सदा०
प्रमत दशाने दूर हठावी
मदोने मारी लात सदा०
अष्ट प्रवचन माता रूडी रीते
पालो छो गुरु राज सदा०
कीर्ति कहे गुरुपद सेवाथी
मलशे शिवपुर साज सदा०

गहुली नं० ९

राग-छोटी वडी सैंयारे

लक्ष्मण सूरीजीरे वंदना मोरी धारना
अति हर्ष हुआ मुजे गुरु के दर्शन में २
भवाब्धि सेरे नाविक वन तारना १
भव भव भटक्यो मोह मेदानमें २
अवनाहि राचुरे कर्मोसे मुझे वारना २
वीरता धीरता सोहे गंभीरता २
वीरती नारीरे हमेभी वरावना ३
अमृत धारा देशना देकर २
पापो को कापोरे भविक नर नारना ४
शास्त्र विशारद सोहे शासनमें २
ज्ञान दीपक सेरे अज्ञानता हटावना ५
जैन जैनेतर आवे व्याख्यानमें २

चाणी सुणकेरे हर्षितहोवे अमापना ६
सुरीजीकी कीर्ति देशो देशमा रे
फली अतिहीरे वंदत वार वारना ७

गहुंली नं० १०

(राग-आवो जावो हो मेरे साधु)

आवो आवो हो मारी व्हेनों करो गुरु वंदन
चालो चालो हो मारी सैयर हरो कर्म फंदन
अंचली०

गुरु वाणीको सुणतां भावे मिटे जन्म मरण
प्रभुवाणी को गुरुजी सुणावे टाले भव भ्रमण
आवो० १

गुरु मल्या छे महा उपकारी याचो साचु शरण

अमृत जेसी मीठी वाणी करो हृदय मनन
आवो० २

एकी धारा उपदेश देके कापे कर्म कठन
तरण तारण है गुरुराया करो भावे नमन
आवो० ३

शुद्ध प्ररुपणा गुरुजी करता करो भावे श्रवण
मेघ गर्जारवथी मोर हर्षे तिम सौ सुणी वचन
आवो० ४

पंच महाव्रत पालनहारा करता इन्द्रिय दमन
षड काय रक्षा करनारा करे क्रोधादि शमन
आवो० ५

प्रमत्त दशाको दूर हटाके करे विदेश गमन
सच्चे ध्यानी ज्ञानी सुज्ञानी सेवो गुरुके चरण
आवो० ६

लब्धिलक्ष्मणसुरीश्वरजीकी करोभक्तितनमन
जेथी जगमा कीर्ति जामे प्रगटे आतम धन
आवो० ७

गहुंली नं० ११

(राग रसीया बंधावो भैया)

हील मील आवो सैया गुरु गुण गावोरे
गंभीरता है भारी सुरत मनोहारी
भव जल तारण नैया गुरु गुण गावोरे १
गुरु गुणगते आपे मंगल मन में माये
हर्ष अतिही थैयां गुरु गुण गावोरे २
भगवतीजीकी वाणी गणधरोने गुंथाणी
सुनो सुनोरे सैया गुरु गुण गावोरे ३
गुरु है मेरे ग्यानी सुनावे मीठी वाणी

नर नारीने गुण गैयां गुरु गुण गावोरे ४
शांत दांत त्यागी शिवरमणी के रागी
आतम आनंद लैयां गुरु गुण गावोरे ५
वाणी सुधाको पावे भविजन मनको भावे
सुरीजीकी बोलो जैयां गुरु गुण गावोरे ६
लक्ष्मण सूरीजीको वंदन हमारा क्रोडो
कीर्ति जग फेलैयां गुरु गुण गावोरे ७

गहुंली नं० १२

(राग-भेखरे उतारो राजा भरथरी)

सद गुरु देशना सांभळो
मळी सौ नर नारजी
दश द्रष्टांते दोहिलो
पाम्या नर अवतारजी सद० १

दान शियळ तप भावने
    भावो हृदय मोझारजी
श्रावकनी करणी सदा
    पाळो यत्ने विस्तारजी   सद० २

चंदरवा दश ठाममां
    बांधो चतुर सुजाणजी
समकितनी शुद्धि करो
    समजो साचु ज्ञानजी   सद० ३

अणगल पाणी नहि पीवो
    धरो धर्ममां ध्यानजी
रात्री भोजनने तजो
    तजो अभक्ष्य पानजी   सद० ४

धर्म मूळ विनय वख्यु
    उत्तराध्यन मोझारजी

विनय विण विद्या नहि
　　नही तप वीरती नारजी　　सद० ५
विधि पूर्वक क्रिया करो
　　मेळवी ज्ञान भंडारजी
दर्शन शुद्धि ने करी
　　वरो विरती नारजी　　सद० ६
कर्मो उपाडी लई जशे
　　चेतो जल्दी चेतनजी
मोह माया छे कारमां
　　चितामां बलशे तनजी　　सद० ७
भविष्ये लख्या लेखजे
　　नहि जाशे भूसायजी
वनमां नहि छोडे कर्मरे
　　भोयराके हवेली मांयजी　　सद० ८
वीरवाणी हृदये धरी

धरो धर्ममां टेकजी
लक्ष्मण सूरीजीनी देशना
सुणता लहो विवेकजी सद० ९
कीर्ति जगमा जामशे
मळशे शिवसुख सारजी
ज्ञानी गुरु मळे भाग्यथी
खरा गुरु आधारजी सद० १०

गहुंली नं० १३

(राग-आदिले अरिहंत अमचेर आवोरे)

बेनी वदो गणीश्वर रायने बहु मायेरे
जैन शासन शिरताज सुरीजी कहावेरे
बेनी० १
गंभीर गुण गया आप सुरीजी रायरे

शुभ लक्षण पारावार अंगे सोहायारे
वेनी० २
त्रण भुवनमां यश गान सूरीना गवायारे
मधुरी वाणी सुणावी मन मलकायारे
वेनी० ३
मयूर[1] जिम जोई मेघ अति हरखावेरे
तिम वाणी सुणावी रसाळ मन मलकावेरे
वेनी० ४
वाणी गुण खाणी सुणो भवि प्राणीरे
शुद्ध श्रद्धा भक्ति भाव दीलमां आणीरे
वेनी० ५
मिथ्यात्व तिमिर[2] हणीने ज्ञान प्रकाशेरे
जिम विकसित पुष्प सुगंध अति सुवासेरे
वेनी० ६

---

१ मोर २ अंधकार.

आदेर प्रवचन करता गच्छना धोरीरे
षड शास्त्र तणा छो ज्ञान हाथमां दोरीरे
बेनी० ७
मरु पंजाबने मेवाड़ देश विचरीयारे
गुरु हस्ते केई प्राणी संयम वरीयारे
बेनी० ८
लक्ष्मण सुरीजी की वाणी सदा सुणीयेरे
धाय कीर्ति कमलाकार कर्मने हणीयेरे
बेनी० ९

गहुंली नं १४

श्री भगवती सूत्रनी गहुंली

राग-मरवनी पाटे सुपलीरे

भगवती सूत्रनी वाचनारे
सुणो भवि आज गुरुणा ।

श्रद्धा भक्तिथी सुणतांरे

सीधे सघळा काज सलुणा ॥

गौतम स्वामी प्रश्नो पूछेरे

छत्रीश सहस प्रमाण सलुणा ।

प्रश्नना उत्तर आपतारे

गोयम कही भगवान सलुणा ॥

एक श्रुतस्कंधे कह्यारे

उद्देशा एकतालीश सलुणा ।

शतके शतके उद्देशा घणारे

भाखे श्री जगदीश सलुणा ॥

अठ्ठासी हजार बेलाखनुंरे

पद तणुं प्रमाण सलुणा ।

द्रव्यानुं योगथी भर्युंरे

ज्ञाननी छे ए खाण सलुणा ॥

नाम त्रण छे ए सूत्रनारे

पहेलु पांचमुं अंग सलुणा ।
बीजुं विवाह पन्नती त्रीजुंरे
भगवती सूत्र सुरग सलुणा ॥
सर्पझेर जिम उतरेरे
मंत्र तणे प्रयोग सलुणा।
तिम ए सूत्र सुणतां थकींरे
नासे भवनो रोग सलुणा ॥
स्वस्तिक धुप दीपक करोरे
अंग पूजन उदार सलुणा ।
गुरु पासे शुद्ध भावथींरे
सुणता भवनो पार सलुणा ।।
संग्राम सोनीये सांभल्युरे
आतमने सुखकार सलुणा ।
प्रश्ने एक सोनैये पूजतांरे
एम छत्रीश हजार सलुणा ॥

सदगुरु आगळ भावथीरे
　　　　सुणो सौ नरनार सलुणा ।
भाग्य उदये सुगुरु मल्यारे
　　　　ज्ञान तणा भंडार सलुणा ॥
लब्धिसूरिजी पसायथीरे
　　　　चोथो आरो वरताय सलुणा ।
सुरीजीनी देशो देशमांरे
　　　　कीर्ति अति फेलाय सलुणा ॥

गहुंली नं. १५

(राग-भारतका डंका आलममें)

गुरु मारा गुण गण भंडारी
गुरु वाणी अति छे हितकारी
सुणी हर्षे सौ नरनारी
　　　　प्रभु वाणी अमने सुणावोने　१

व्याख्यान शैलीनी अजब छटा
कंपाव्या विरोधी हस्ति भटा
अति तरबोळ गुरु ज्ञानघटा प्रभुवाणी २
गुरु जैन शासनने दीपावोछो
अज्ञान तिमिरने हटावो छो
शिवपुर पंथ बतावो छो प्रभुवाणी ३
मनोहर प्रवचनने आपी
धर्म ध्याने दील दीधा थापी
त्यां आतम ज्योत अति व्यापी.प्र ४
मोह मायाना पिंडने दहनारा
अनुकुल प्रतिकुलता सहनारा
शुद्ध यतिधर्मने वहनारा प्रभुवाणी ५
शुद्ध परुपणा सुरीजी करता
षडशास्त्र ना ज्ञानने मन धरता
जैन जैनेतर दील हरता प्रभुवाणी ६

नव ब्रह्मचर्य गुप्तिना धारी
मद आठने दीधा दूर वारी
गुरुवाणी लागे बहु प्यारी प्रभुवाणी ७
शांतमुद्रा अति शोभी रही
सूरीलक्ष्मण वाणी सरीत वही
तस कीर्ति ले आनंद चही प्रभु० ८

गहुंली नं. १६

(राग-ज्ञान कदि नवि थाय मुरखने)

लक्ष्मण सुरी गुरुराय
भवि वंदो लक्ष्मण सुरी गुरुराज
पुण्य उदयथी गुरुश्री मलीया,
फलीया मनोरथ आज भवि.
बालवये संसार तजीने,
लीधु चारित्र स्वीकार भवि.

ज्ञान ध्यान मां मस्त बनीने,
करता आत्म उद्धार भवि
ब्रह्मचर्य तेजे दीपे काया,
उज्वल चंद्र समान भवि.
मात पितानो वंश दीपाव्यो,
धन्य जनम प्रमाण भवि.
न्याय ज्योतिषमां विद्वता सारी,
करता शास्त्र अभ्यास भवि.
शुद्ध परूपण गुणथी गुरुजी,
करता मिथ्यात्व नाश भवि
विविध देशमा गुरु श्री विचरी,
कीधो बहु उपकार भवि.
लब्धि सुरीश्वर शिष्य कहावो,
सुरीश्वर पदना धार भवि.

तत्व त्रयीनुं स्वरूप बतावी,
करान्युं साचुं ज्ञान भवि.
गुरुपद सेवो भावे भवियां,
धरी दील एक ध्यान भवि.
पद्म[1] सम विकसित मुखडु,
समकितना दातार भवि.
अन्य शास्त्रोना पण अभ्यासी,
गुरु गुण तणा भंडार भवि.
गंभीर नादथी वाणी मधुरी,
सुणावो छो गुरुराज भवि.
सेवक कीर्त्ति गुरु गुणगावे,
शिव सुख चाहना काज भवि.

---

१ कमळ

गहुंली नं. १७

(राग-दिवस दीपे आज मंगलकारी)

बेनी सुणो आज गुरुजीनी वाणी
धरी उलट हृदयमां आणी बेनी
गुरुराजनी देशना चाखो,
ज्या सूत्र सिद्धांतनी साखो
कर्म पिंडने बाली नाखो बेनी १
अभक्ष्य वस्तुओने तजजो
शील व्रत शणगारने सजजो
नित्य जिनवरने ध्याने भजजो बेनी२
दुर्लभ मानव जन्मने पामी,
वेठफी नांखशोरे नहि कामी
बनो शिवसुखना तमे गामी बेनी ३
प्रभु दर्शन करवा जावे,

पछी गुरु वंदन करो भावे
सुणी व्याख्यान दिलमां ठावे बेनी ४
सुनी व्याख्यान मनमां धारो,
घेरे जइने पाछु विचारो
मोह माया रीपु[१] मद मारो बेनी ५
मधुर वाणीथी रंजन करता,
भवि जीवना मनने हरता
सुणी वाणी केइ प्राणी तरता बेनी ६
अलगण पाणी कदी नवि पीजे,
नित्य दान सुपात्रे दीजे
नर भवनो लाहो लीजे बेनी ७
नवा व्रत पच्चखाणने कीजे,
जेथी कारज सघलां सीजे
सूरीलक्ष्मण कीर्ति वंदीजे ।

---

१ शत्रु.

गहुंली नं. १८

श्री बारसा सूत्रनी

(राग-दिवस दीपे आज मंगळकारी)

सखी सुणो आज बारसासूत्र
जेथी थाय आतम पवित्र सखी
सर्व शास्त्रोमां शिरोमणी जाणो
जेम तारामां चंद्र वखाणो
ज्या आगमनाछे प्रमाणो. सखी. १
न्याय प्रवीणमां जेम राम
रुपे रम्भा सुरुपे काम
मोहे देवोमा इन्द्र समान. सखी. २
प्रथम वीर चरित्र सुहावे
सुणो पार्श्व चरित्रने भावे
पछी नेम प्रभुजी कहावे. सखी. ३

आंतरा चोवीश जिनना जाणी
ऋषभदेवनुं चरित्र वखाणी
पछी स्थविरावली मन आणी. सखी ४
संवत्सरी पडिकमणुं कीजे
समस्त मुनिओने वंदीजे
भावे चैत्य परिपाटी कीजे सखी. ५
साधर्मी वात्सल्य करीने
अट्ठम तप तपस्या वहीने
वरो शिवसुख कर्म दहीने सखी ६
खमत खामणा दीलथी करवा
जुना पापना लेपने हरवा
करो ए करणी भवजल तरवा सखी. ७
मैत्री भावने दीलमां जगावो
लक्ष चोराशी जीव खमावो
जेथी पाछळ नहि पस्तावो. सखी. ८

बारसा सूत्रनी पवित्र वाणी
लक्ष्मण सूरीना मुखथी कहाणी
तम कीर्ति त्रिदिवे गवाणी. सखी. ९

गहुंली नं० १९

(राग-माई जतन हा वतन)

मारा प्रणाम हां मारा प्रणाम
सुरीजी स्वीकारो मारा प्रणाम
आवोने सखीओ गुरुजी पधार्या
लक्ष्मण सूरी जेनु रुडु छे नाम मारा०
ईंदोर शहेरमा गुरु मल्याथी
फल्या मनोरथ मारा तमाम मारा०
ब्रह्मचर्य तेज जलहलतु जेथी
आकाशे गया रवी शशी थई श्याम-मारा

अतुल धीर गंभीरता जेमां
शुभ लक्षण अंगे छाजे तमाम   मारा०
परिसह बावीश आकरा सेहता
मोह साथे जेने मांड्यो संग्राम   मारा०
आत्म दशामां लयलीनता लागी
काढे छे पर परिणती परीणाम   मारा०
त्रिविध तापने दुर हटावे
भवि जीवोको देता आराम   मारा०
जाणी पोताना कृपा करीने
मुक्तिपुरीमां करावो विश्राम   मारा०
देश विदेशमां नाम गवाये
कीर्ति फेलाणी छे ठामो ठाम   मारा०

गहुंली नं० २०

(राग सजनी मोरी)

गुरु मारा लक्ष्मण सूरिजी रायारे
गुरु मारा बाल पणे संयम पायारे
गुरु मारा आगम अमृत पावेरे
गुरु मारा अज्ञान तिमिर हटावेरे
गुरु मारा पंच महाव्रत धारीरे
गुरु मारा षड जीव रक्षाकारीरे
गुरु मारा स्यादवाद शैलीना ज्ञातारे
गुरू मारा एतो साचा पिता मातारे
गुरु मारा शुद्ध परूपणा करनारारे
गुरु मारा अंग उपाग जाणनारारे
गुरु मारा गुरु आज्ञा ए विचरतारे
गुरु मारा मिथ्या ज्ञान हरनारारे

गुरु मारा आत्म स्वरूपे रमतारे
गुरु मारा काम कषाय ने शमतारे
गुरु मारा इंद्रिय विषयने दमतारे
गुरु मारा पाले संयम छोडी ममतारे
गुरु मारा जेने गुरू गुण गमतारे
गुरु मारा ते दुर्गतिमां नहीं भमतारे
गुरु मारा कीर्त्ति तणा आधारारे
गुरु मारा भवि जीवोने तारनारारे

गहुली नं० २१

(राग-प्रभु दरबारे आवो)

गुरु मंदिरे आवो धर्म भावने जगावो
मारी व्हेनो गुरुजीने वंदो भावथी
वीर प्रभुनी वाणी गणधरोथी गुंथाणी मारी
सुणी मधुरीवाणी करो आतमकमाणी मारी

आतमने हित जाणी ग्रहीले हवे शाणी मारी
खरी धर्मनी जुवानी छोडीदे हेवानी मारी
दया दीलमाधारी बनो विवेकविचारी मारी
जूठ मायाने चोरी मुकीदो हवे कोरी मारी
दान शियल तपभाव दीलमां खुबचसाव मारी
विषय रूपायने वारो मोहादिदुतने मारो मारी
ज्ञान घटने पीवो गुरु मल्याछे दीवो मारी
शुद्धतत्वोने समजावे ज्ञानपीयूष पीलावेमारी
जरा अवस्था आवे जरजरीया खवराने मारी
घात तडाका भूको गुरु चरणेजई झुको मारी
जोनरभवमाहीभूलशोतोनरकोमाहीरूलशो.
वधशे कीर्ति जगमां जो धर्म रगरगमा
मारी व्हेनो गुरुजीने वदो भावथी ॥

गहुंली नं. २२

(राग-वीर वारू नाम व्हालुं लागे)

गुरुजीनी वाणी मीठी लागे
 हो बेनी ज्ञान भरपुरा,
लक्ष्मण सूरीजी ज्ञान भरपुरा
 विद्वत्तामां न अधुरा हो बेनी १
पंच महाव्रत पालणहारी,
 त्रण गुप्तिने वधारी होबेनी २
उपदेश आपी केई प्राणी तार्या,
 भवजल पडता उगार्या होबेनी ३
दीव्य ज्ञाननी ज्योत जगावी,
 शासन सेवा बजावी हो बेनी ४
व्याख्यान सुणवा सौ कोई आवे,
 गुरु गुण रंगे गावे हो बेनी ५

श्रद्धा भक्तिथी गुरु पद ध्यावो,
जेथी शिव सुख पावो हो बेनी ६
म्हेसाणा गाममां गुरुश्री पधाये,
चोथो आरो वर्ताये हो बेनी ७
स्याद्वाद शैली स्पष्ट समजावे,
साचा मार्गने बतावे हो बेनी ८
सुरीश्वर पदने गुरुश्री पामी,
कीर्ति जगमां जामी हो बेनी ९

गहुंली नं. २३

(राग-आवो आवो पासजी)

सखी सुरीराजनी वाणी सुणीयेरे,
सुणी कर्म मलोने हणीये सखी
गुरु वाणी अति मीठी लागेरे,

शुद्ध आतम भावना जागेरे
भवो भवना पातक भांगे, सखी १
गुरु राजनुं शरणुं साचुंरे
भवो भव सेवा याचुंरे
मोह मायामां नहि राचुं सखी २
निंदा विकथा परिहरीएरे
धर्म ध्यानमां चितने धरीएरे,
नहि अटके नाव भवदरीये, सखी ३
गुरु वाणी अंतरमां धरीयेरे,
मिथ्या मति दूरे हरीयेरे
समकितनी शुद्धि करीये, सखी ४
गुरु वाणी कदी नवि चुकीयेरे,
देव देवलाने नवि झुकीयेरे
क्रोध मानने बाली मुकीये, सखी ५
अभक्ष्य वस्तुओ तजीयेरे,

परमात्मा दशाने भजीयेरे
शील व्रत शणगारने सजीये, सखी ६
इंद्रिय विषयोने दमीयेरे,
काम कषाय ने नित शमींयेरे,
समता रसमा नित्य रमीये, सखी ७
सुरी लब्धिनी पाट दीपावीरे,
सुरीश्वर पदने सोहावीरे,
जगमा कीर्ति अति फेलावी, सखी८

गहुंली नं. २४

(वीर कुंवरनी वातडी केने कहीये)

लक्ष्मण सूरीजी की देशना बहु सारी
हारे भव जल थी तारणहारी
हारे थाय हर्षित नरने नारी
हारे आतम सुखकार लक्ष्मण सूरी.१

बाल पणामां सूरीजी संयम वरीया
हांरे संसार अटवी उलंघ्या
हांरे गुरू गुण गणोथी भरीया
हांरे ज्ञान ध्यान सार. लक्ष्मण सूरी. २
पंच महाव्रत सूरीजी शिरे धरता
हांरें षड कायनी रक्षा करता
हांरे मोह मायाने परि हरता
हांरे लोभथी अतिदूर लक्ष्मण सूरी. ३
वी प्रभुजीनी वाणी सुणावे
हांरे भव कुप[1] मां पडता बचावे
हांरे शुद्ध समकित हृदये ठावे
हांरे आनंद न मांय. लक्ष्मण सूरी ४
गुर्जर[2] मरूधर[3] देशे विचरता

१ कुवा २ गुजरात ३ मारवाड

हारे जाहिर प्रवचन करता
हारे जैन जैनेतर मन हरता
हारे करता उपकार लक्ष्मणसूरि ५
शासनमा गुरु कोहीनुर जाग्या
हारे यश वाजा तेहना वाग्या
हारे जोड जमाना वादी भाग्या
हारे वरते जयकार लक्ष्मण सूरि. ६
सहस अढार सीलांग रथ धारा
हारे गोचरी दोषने टालनारा
हारे संयम शुद्धि करनारा
हारे ममताना भंडार. लक्ष्मण सूरि ७
शिष्य समुदाय मनहर सोहे
हारे जुना कर्मना लेप निछोहे
हारे सौ संघना मनडा मोहे
हारे कीर्ति उज्वल
लक्ष्मण सूरीजीनी देशना बहुसारी ८

गहुंली नं० २५

(राग भरतनी पाटे भूपतिर)

वंदो लक्ष्मण सूरीराय नेरे
हर्षे सौ नरनार सलुणा
महा भाग्ये गुरुजी मल्यारे
गुरु गुणना भंडार. सलुणा०
भव सागर थी तारवारे
गुरुजी नाव समान. सलुणा०
आतम ध्यानमां मग्न छेरे
स्वपर शास्त्रना जाण. सलुणा०
अम उपर कृपाकरीरे
पधार्या गुरु राज सलुणा०
आनंद अति वर्तावीयोरे
सार्या सघळां काज. सलुणा०

एकी धारा देशना देईरे
करता मन रंजन. सलुणा०
समिति गुप्ति हृदये धरीरे
करता ज्ञान अंजन. सलुणा०
वाचना आपी रुडी परेरे
थाये समकित शुद्ध सलुणा०
मोह सुभट भट रणमारे
हरावे करी युद्ध सलुणा०
प्रमत्त दशा दूरे करीरे
करता आतम शुद्धि. सलुणा०
न्याय शास्त्रमा प्रवीण छेरे
तार्किक छे अति बुद्धि सलुणा०
शरणु साचु गुरुजी तणुंरे
याचो भरो भव सेर. सलुणा०

शुद्ध भावे सेवा करीरे
ल्यो शिवपुर मेव. सलुणा०
गुरु वाणी सुणी केई तर्यारे
पामे सुख अपार. सलुणा०
जगमां कीर्ति घणी वधेरे
न पडे दुःख लगार. सलुणा०

गहुंली नं० २६

(राग-में ढूंढ फिरा जग सारा जग सारा)

गुरु वाणी हितकारी हितकारी
भविजन सुणो भावथी.
मोह तरंगने दबाव नारी
ममता नारीने हटावनारी
भवजलथी तारनारी तारनारी भविजन. १

समता रसनो ख्याल करावे
ज्ञानामृत ने हृदये पावे
आतम उद्धार करनारी करनारी भविजन. २
पेयापेयनु ज्ञान करावी
दुर्गति पडता सौने बचावी
अज्ञान अंधेर हरनारी हरनारी.
भविजन० ३
काम कषाय ने समावनारी
नीति अनीतिने बतावनारी
क्लेश कंकाश मारनारी मारनारी
भविजन० ४
मोरो मेघ जोई जिम हर्षे
तिम गुरुजीनी वाणी वर्षे
हर्षे सुणी नरनारी नरनारी भविजन० ५
पुण्य पापनो रस्तो बतावे

जीवाजीवनुं स्वरूप बतावे
कुमति ने वारनारी वारनारी.
भविजन० ६

देव गुरुने धर्मना मर्म
बतावी कापे कठिनकर्म
गुरु साचा उपकारी उपकारी. भविजन०७
लक्ष्मण सुरीजीनी वाणी छाजे
तस कीर्ति दस दिश गाजे
लेवा शिव वरनारी वरनारी. भविजन० ८

गहुंली नं० २७

(तुमने मुजको प्रेम सिखाया)

लक्ष्मण सूरीजी मेरे मन में भाया
माता बापु बाई कुंखे जाया

पिता मुळचंद भाई कुळ सोहाया
वर घर आनद मंगळ गागा
वंदन हो वारवार सुरिजी
वंदन हो वारंवार. १
परमत वादी दूर भगाया
धर्म जगाया ज्ञान वताया
वंदन हो वारवार सुरीजी
वंदन हो वारवार. २
ज्ञान पीयूष का प्याला पिलाया
मिथ्या तिमिर को जड से जलाया
समकित के दातार सुरीजी
समकित के दातार. ३
ज्ञान सौरभ को जगमें फेलाया

---

१ अमृत २ अंधकार ३ सुगधी

भवसे तराया दुःख से बचाया
वंदन हो वारंवार सुरीज़ी
वंदन हो वारंवार. ४
मोक्षपुरीका रस्ता दिखाया
कर्म हटाया भविजन तार्यां
सच्चे हो तारणहार सुरीजी
सच्चे हो तारणहार. ५
सुवर्ण सम है दीपती काया
छोड माया और संयम पाया
समकित के दातार सूरिजी
समकित के दातार. ६
तत्व त्रयीका स्वरूप बताया
तान लगाया मोह भगाया
फैली है कीर्ति अपार सुरिजी ७

गहुंली नं० २८

विहारनी

(राग-नझरु)

गुरुजी विनवु आजे
स्वीकारो विनती मारी. अंचली०
सुणी विहारनी वातो
हृदयमां थाय आघातो
ज्ञानी छो आप गुरुराया स्वीकारो० १
अमृत सरखी मीठी वाणी
हवे क्यां सुणशुं गुरुजी
दया दीलमा जरा आणी स्वीकारो० २
घरनुं काम झट करता
गुरु व्याख्यान सुणवाने
गुरुनी तो जाय छोडीने स्वीकारो० ३

पाछळ शुं थाशे कोकोनुं
जरा विचारो दील गुरुजी
विवेक नयनोथी जोइने स्वीकारो० ४
वीत्या वर्षोना वर्षो पण
नथी चोमासुं थयुं आनुं
रमतां आनंद लेहेरोमां स्वीकारो० ५
आश्रय लीधो अमे आपनो
मूकीने क्यां हवे जावो
शांति राखी थोडा दिवसो स्वीकारो० ६
शरण लइशु हवे कोनुं
सुणशुं क्यां हवे वाणी
धर्मनी गोष्टी क्यां करशुं स्वीकारो० ७
सुपात्रे दान क्यां दइशुं
धर्म लाभ क्यांथी हवे लइशुं
वंदन करवाने क्यां जइशुं स्वीकारो० ८

गुरु निहारथी संयमा
    थशे दुःख बहुभारी
कृपा नजरोथी जोइने   स्वीकारो० ९
कुमार्गे पडता जीवोने
    बचावशे कोण हवे गुरुजी
उजवळ कीर्ति गुरुश्री नी स्वीकारो० १०
बाळकनी विनती मानी
    रोकाई जाजो हवे गुरुजी
वधु कहुं शुं हवे ज्ञानी   स्वीकारो० १२

गहुंली नं. २९ स्वागत गीत.

(राग—वीर कुंवरनी वातडी केने कहीये)

धन्य घडी धन्य दिवस आज
    हांरे मलीया सूरि शिरताज।
हांरे फळीया मनोरथ आज
    हांरे आनंद अपार   धन्य १

परिवार साथे सूरिजी पधारी
हांरे सौ संघना हर्ष वधारी
हांरे सव कुंभमां पडता उगारी
हांरे गुरु तारण हार धन्य २
विचरंता विचरंता इहां आव्या
हांरे केई वादीओ हटाया
हांरे युक्तिओ देइ समजाव्या
हांरे षड शास्त्रना जाण धन्य ३
सूरिजी नी वाणी, लागे अति रसाली
हांरे कर्मोने नांखे बाली
हांरे मोह मायाने दूरे टाली
हांरे आपे शिवराज धन्य ४
तपगच्छ [1]गगने [2]दिनमणी [3]सोहे

---

१ समुद्र २ आकास ३ सुर्य.

हांरे भविजनना मनडा मोहे
हांरे अष्ट कर्म लेप विछोहे
हारे लेवा शिवराज धन्य ५
रत्नाकर सम सूरिजी गंभीरा
हांरे मेरू सम सूरिजी धीरा
हांरे शासनमा सूरीजी हीरा
हारे समता अजब धन्य ६
अग्यार अंग चित धरनारा
हांरे मिथ्या मति हरनारा
हांरे ज्ञानामृतने देनारा
हांरे प्रणमो धरी भाव धन्य ७
लब्धि सूरीजीनी पाटे बिराजे
हारे ज्ञानादि रत्नोथी छाजे
हारे जस कीर्त्ति त्रिदीवे गाजे
हांरे वदु वार हजार धन्य ८

गहुंली नं. ३०

वीर जीन जन्म दिवस.

(राग—सिद्धाचलना वासी)

वीर जीन केरो जन्म
भवीयां हर्ष अपार ॥
माता त्रिशला देवी जाया
क्षत्रिय कुळमां जन्म पाया
पीता सिद्धारथ जाण
भवीयां हर्ष अपार १
छप्पन दिग्कुमरी हुलराया
नर सुरासुर गुण गाया
करे ओछव अती ठाठ
भवीयां हर्ष अपार २
चोसठ इन्द्रो प्रेमे आवे

सुरगीरि पर प्रभुने ठावे
करे जन्मोत्सव,
भवीयां हर्ष अपार ३
आठ जाति कळशे नवरावे
तिहां प्रभुजी मेरु कंपावे
इन्द्र करे विचार
भवीयां हर्ष अपार ४
त्रण लोक प्रकाशे भरीयुं
नारक पण क्षण सुखने वरीयुं
कोइ रहे न उदास
भवीयां हर्ष अपार ५
उत्तरा फाल्गुनी चंद्रमां आवे
चैत्र सुदी तेरस दिन जावे
उच्च ग्रहोनो योग
भवीया हर्ष अपार ६

नंदीश्वरमां करी महभारी
देव देवी गये हर्ष अपारी
करी विविध नाट्य
सखीयां हर्ष अपार ७
आतम कमलमां लब्धि आपो
सूरी लक्ष्मण कीर्ति दुःखकापो
व्यापो रग रग मांय
सखीयां हर्ष अपार ८

विहारकी गहुली ३१

(राग-शांतीसुख्व तमारी जोतां)

गुरुजी मारा विनती मारी,
स्वीकारो उरधरी धरीने.
वीरमगामना संघनी विनती,
स्वीकारो उरधरी धरीने.

समकित निर्मल करवासारुं,
आपने दीलमा गुरुजी धारुं.
नहीं रह्यू कयां हवे वारुं,
करावो आनंद रही रहीने गुरुजी. १

गुरुजी गुरुजी कोने कहीशुं,
शरणु हवे अमे कोनु ग्रहीशुं.
चाल्या आपतो अमने मूकीने
वंदन करवु क्यां झुकी झुकीने गु २

दान सुपात्रमा हंमेशादेता,
लाभ अमे भक्ति करीने लेतां
वहोरवा माटे हवे कोने,
विनती करशुं लळी लळीने गुरुजी ३

अडधा घरना कामने छोडी,
आवता अमे अहींआ दोडी.

छुटे कंपारी सौना हृदयमां,
विहार वातो सुणी सुणीने गुरुजी. ४

मीठी अमृत देशना आपनी
सौना हृदयमां लागती प्यारी
धन भाग्य मारा गुरुजी आवा
मळशे क्यारे फरी फरीने गुरुजी. ५

आपनु चोमासुं आनंदकारी
नर नारी मन हर्ष अपारी
वाणी सुणवा आवता सुखेथी
दीलमां हर्ष भरी भरीने गुरुजी. ६

जैनेत्तरोपण सुणवा आवे
गुण तमारा भावथी गावे
उद्योत थाशे जैन धर्मनो
रही जावो कृपा करी करीने गुरुजी. ७

ह्वे उपाश्रय सुनो लागशे
सगन अमारा कोण कापशे
दया लाइने जरा मनमां
आप जुवो पाछु वळी वळीने गुरुजी ८
सुधरशे केई भवि प्राणी
आपनी मीठी सुनी वाणी
बधु जाणोछो आप ज्ञानी
बधु कहुं शुं फरी फरीने गुरुजी ९
विनती पाळजो स्वीकारी
विहार करशो नहि उपकारी
कीर्ति फेलाशे बहु तमारी
विनती मानो रही रहीने गुरुजी १०

——

श्री सिद्धचक्रजी का स्तवन.

सिद्ध चक्र मुज दिल में भाया
कल्प तरु सुखकार सोहाया
नव पद शाखा जिसकी सवाया
सुर नरवर किन्नर गुण गाया
तुमही जग विख्यात. तारक० १

बारह अंगमें तुमही छाया
माया नसाया शिव वसाया
तेरो ही ध्यान प्रधान. तारक० २

सार सार सब तत्व मिलाया
श्री सिद्ध चक्र के स्थान ठराया
अव्वल है जग सार. तारक० ३

अरिहंत सिद्ध आचारज सोहे

वाचक मुनिपद मनको मोहे
दर्शन ज्ञान निधान. तारक० ४
आतम मन में कमल बनाकर
अष्ट पांखडी ए नवपद ध्याकर
तप चरण अवदात
जगमें नवपद ए अवदात. ५
आत्म कमल में तत्त्व बसाना
लब्धि मीलाना गुण को खीलाना
जपी 'सोहं' पदजाप. भवीयां ६

सिद्धचक्रजी का स्तवन.

(राग--काली कमली वाले)

सिद्ध चक्र को प्रणमो धरी हर्ष अपार
पहेले पद अरिहंत नमंता

सिद्ध प्रभु का जाप जपंता
न पडे दुःख लगार. धरी० १

पंचाचार ने पाले पळावे
आचारज पद सेवो भावे
शासन के शिरताज. धरी० २

वाचक वर्य वांचना आपे
शिष्यों ने सद मार्ग मां स्थापे
सुमति के दातार. धरी० ३

साधु पद सेवो सदा भावे
आत्म रमणमां जे नित्य मालें
संयम पालण हार. धरी० ४

दर्शन ज्ञान चारित्र आराधी
स्व आतम का कारज साधी
तपो तप सुखकार. धरी० ५

इम नवपद का ध्यान धरंता
आराधन शुद्ध भावे करता
वरो शिव सुखसार धरी० ६
श्री श्रीपाळने मयणां सुंदरी
एक चित्ते आराधन करी
पाया सुख अपार. धरी० ७
आत्म कमलमां लब्धि दाता
सूरि लक्ष्मण कीर्त्ति गुणगाता
वर्ते जय जय कार. धरी० ८

भोपावर तीर्थ स्तवन.

(राग-तुमने मुजको प्रेम सीखाया)

शांति जिनंद प्रभु दर्शन पाया
दीलमें आनंद पूर गनाया

कर्म कलंक को दूर भगाया
ज्ञान दीखाया भवसे तराया
तुमही तारण हार जीनजी १

तुमही तारण हार

काउसग मुद्राए प्रभु ठाया
दील मोहाया भविजन आया
तुमही तारण हार जीनजी २

तीरथ भोपावरमें सोहाया
नाम गवाया अचिराके जाया
तुमही तारण हार जीनजी ३

षट् खंड त्यागी संयम पाया
कर्म खपाया मुक्ति सीधाया
तुमही तारण हार जीनजी ४

क्रोध मान लोभ टाली माया

राग मीटाया द्वेष जलाया
तुमही तारण हार जीनजी ५
आतम कमल लब्धि विकसाया
सूरी लक्ष्मण कीर्ति गुणगाया
तुमही तारण हार जीनजी ६
तुमही तारण हार

श्री राजगढ महावीर जिन स्तवन

(राग-थई प्रेम वश पातलीया)

भजो वीर जिनंद सुखकारी
जस मूरति अति मनोहारीरे. भजो
महा पुण्ये प्रभु दर्शन पाया
टीन्ह दर्प अति उमराया

सवि कर्म कलंक हटाया
गुण गावे सुरासुर, नर नारीरे. भजो १

ज्ञान दिवाकर[1] गुण रत्नाकर[2]
समकित के दातारी
मोह सुभट को मारी
दीये शिवसुख आनंदकारीरे. भजो २

त्रिशला नंदन भव भय भंजन
वदन[3] शशी सम सोहे
भविजन मनकु मोहे
जिन दर्शन अघ[4] घर्षण कारीरे. भजो ३

इंद्रे प्रभुको सुरगीरि[5] ठाया
अंगुठे मेरु कंपाया

---

१ सूर्य २ समुद्र ३ मुख ४ पाप ५ मेरु

शंककी शका मीटाया
प्रभु अनंत शक्ति के धारीरे. भजो ४

घोर उपसर्गों प्रभु सहके
केवल ज्ञान निपाया
घाति अघाति जलाया
प्रभु हुए अनंत गुण धारीरे. भजो ५

आत्म कमल में लीन गुण प्यारा
निज लब्धि विकसाया
मुनि लक्ष्मण पाया
तम कीर्ति वरे शिवनारीरे. भजो ६

मांडवगढ शांतिनाथजी स्तवन

(राग-चंदा प्रभुजी से ध्यानरे)

शांतिजिणंद सुखकाररे भवि भेटो हृदय से
भवि भेटो हृदयसे

मूरति प्रभुनी दिन मणि सोहे
मिथ्या तम हरनारीरे. भवि०

मांडवगढ पर आप बीराजो
प्राचीन बिंब सोहायरे. भवि०

सोहे कमळसम विकासित मुखडुं
नयनानंद करनारुंरे. भवि०

महा भाग्ये प्रभु दर्शन पाया
गाया सुर नर नाररे. भवि०

तारक बीरुद प्रभुजी तमारुं
कीजे सेवक उद्धाररे. भवि०
भव वन भटक्यो लटक्यो नरके
अब तुमही आधाररे. भवि०
काम कषायने दूर निवारी
दीजे शिव सुख साररे भवि०
दूर देश से यात्रिक आवे
दर्शकरी हरखायरे. भवि०
आत्म कमळमें लब्धि आपी
बेडाकरो भव पाररे. भवि०
सूरी लक्ष्मण कीर्ति गुण गावे
माने शीष नमायरे भवि०

श्री अक्षय निधि तप स्तवन

(राग-पद्म प्रभु प्राण से प्यारा)

अक्षय निधि श्रेष्ठ तप प्यारा
सेवो वधे भावनी धारा० अंचली.
पर्युषण पर्व सुखकारा
अक्षय निधि तपना द्वारा
आराधो भावे शिवकारा
देखाडो मोक्षना द्वारा. अक्षय. १
श्रावण वदि चोथथी जाणो
संवत्सरी काल परिमाणो
परम पद अक्षय धारा
मळे शिव लक्ष्मी सुखसारा. अक्षय.२
पूजा वर ज्ञाननी कीजे
श्रुत काउसग चित्त दीजे

रचो कुंभ शक्ति अनुसार
    करो स्वस्तिक मनोहारा. अक्षय. ३

नमो नाणस्सनु गणणु
    गणो मणि ३ दो सहस्र नारा
वर्ष एग चार वक्र करलो
    थना मनि मनथकी पारा. अक्षय.४

करम बंध जेह मत्सरथी
    थयो ते जाशे ते तपथी
करो महोच्छव अतिभाग
    पारण दिन उजलो प्यारा. अक्षय ५

आतम कमन्द हितकारा
    तपो ए तप कर्म नारा
निधि नव लब्धि आधारा
    थशे जीव कर्मथी न्यारा. अक्षय ७

पू० पा० आचार्य श्रीमद्
विजय लक्ष्मणसूरीश्वरजी महाराज सा.
के सदुपदेश से निम्न मुताबिक गृहस्थों
तरफ से सहायता प्राप्त हुई है

शा. सरदारमलजी धनालालजी	४००
शा. दलीचंद वीरचंद समरथमल प्रतापजी	४००
भंडारी वखतमल उमेदमलजी	२००
शा. मणीलाल गुणचंद राधनपुरवाला	४००
शा. छगनलाल मीठालाल	३००
शा. जसराजजी रुपचंदजी रोयडावाला	१००
कीमत से	२००
टोटल	२०००